रजिस्टर सं० डी—(डी)—73

REGISTERED No. D—(D)—73

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 16] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 18, 1981 (चैत्र 28, 1903)

No. 16] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 18, 1981 (CHAITRA 28, 1903)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	325
भाग I—खंड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालयों को छोड़कर) द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	479
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	3
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	471
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खंड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खंड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्टें	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालयों को छोड़कर और केन्द्रीय प्राधिकरणों) (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए सामान्य सांविधिक नियम (जिन में सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खंड 3-क—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमे रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमे सामान्य स्वरूप की उप विधियां भी शामिल हैं (के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ) ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खंड 3 या खंड 4 में प्रकाशित होते हैं	*
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खंड 1—उच्चतम न्यायालय, महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासनों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	5159
भाग III—खंड 2—पेटेन्ट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं और नोटिस	187
भाग III—खंड 3—मुख्य-आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	31
भाग III—खंड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1015
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	67
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु आदि के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	325
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence)	479
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Resolutions and non-Statutory Orders issued by theMinistry ofDefence	3
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	471
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A.—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of the Select Committees on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	*
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	*
PART II—SECTION 3-A.—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in section 3 or section 4 of the Gazette of India of General Statutory Rules and Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..	*
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Supreme Court Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	5159
PART III—SECTION 2.—Notification and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	187
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	31
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1015
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	67
PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folio Nos not received

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions Issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1981

स० 28-प्रेस/81—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों की वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है :—

1. श्री बी० के० श्रीधर राव (आई० आर० एल० ए०-2429),
सहायक कमांडेंट, सीमा सुरक्षा दल ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 मार्च 1978)

18 मार्च 1978 को श्री बी० के० श्रीधर राव नागालैंड में मैलूरी चौकी पर एक कंपनी की कमान कर रहे थे, तो इन्हें सूचना मिली कि कुख्यात विरोधियो का एक दल हमारे देश की सीमा पर एक घने जगल की ओर बढ़ता हुआ देखा गया है। इस बात को देखते हुए कि इस बारे में विस्तृत योजना बनाने का उनके पास समय नही है, इन्होंने अन्धेरे मे ही तत्काल कूच करने का निश्चय किया। अपने दस सिपाहियो दूसरी यूनिट से कुछ कार्मिकों को लेकर श्री राव उस स्थान की ओर चल पड़े जहां विरोधियों के होने की सभावना थी। इनका दल रात के अंधेरे में घने जगलों से होते हुए उस इलाके में पहुंचा। वहां सारी स्थिति देखकर इन्होंने अपनी पार्टी को दो टुकड़ियों मे बांट दिया ताकि विरोधियों पर अचानक हमला किया जा सके और उनके भाग निकलने के सब रास्ते भी बंद किए जा सकें। ये कुछ जवानों को लेकर दबे पाव विरोधियों के कैम्प में घुस गए और यह भी नहीं देखा कि वहां विरोधी कड़ी सख्या मे हो सकते हैं। ये फिर रेंगते हुए विरोधियों की झोंपड़ी की ओर बढ़े और दरवाजे पर चौकीदारी करते हुए विरोधी को दबोच लिया और उसकी राइफल छीन ली। तब तक उनकी टुकड़ी के अन्य सदस्य भी वहा पहुंच गए थे और सबने विरोधियो पर धावा बोल दिया। इस मुठभेड़ में एक विरोधी अपने साथी से राइफल छीनने की कोशिश करते हुए मारा गया था और शेष सभी इक्कीस विरोधी जो सीमा की ओर भाग जाने का प्रयास कर रहे थे जीवित पकड़ लिए गए और उनके हथियार गोला-बारूद दस्तावेज और अन्य सामान जब्त कर लिए गए।

इस कार्रवाई में श्री बी० के० श्रीधर राव ने उच्चकोटि की कर्तव्य-परायणता, नेतृत्व तथा साहस का परिचय दिया।

2. कैप्टन हर्ष कौल (आई० सी०-30858),
5, गोरखा राइफल्स (एफ० एफ०) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 16 जनवरी 1979)

4/5 जनवरी 1979 को विरोधियों के एक गिरोह ने असम तथा नागालैंड सीमा के पास एक गांव के निरीह निवासियों की निर्मम हत्या कर दी थी। इन विरोधियों को पकड़ने के लिए 15/16 जनवरी 1979 की रात में कैप्टन हर्ष कौल को उस स्थान पर छापा मारने का काम सौंपा गया जहां इनके छिपे होने की सम्भावना थी। इस काम के लिए बहुत कम समय दिए जाने के बावजूद इन्होंने बड़ी सावधानी से छापा मारने की योजना बनाई और उस गांव में पहुंचे जहां विरोधी छिपे हुए थे। इन्होंने इस आक्रमण में स्वयं पहल की और 34 विरोधियों को उनके ग्यारह हथियारों के साथ बंदी किया। कैप्टन कौल की इस कार्रवाई से वहां की जनता और सिविल प्रशासन के अधिकारियों का मनोबल बढ़ा और उनमें फिर से आत्म विश्वास की भावना पैदा करने में सहायता मिली।

इस कार्यवाई में कैप्टन हर्ष कौल ने उच्च कोटि का साहस, नेतृत्व और कार्य कुशलता का परिचय दिया।

3. जे० सी० 84782 नायब सूबेदार सवाई सिंह, (मरणोपरान्त)
राजपूताना राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 मार्च 1979)

नायब सूबेदार सवाई सिंह जम्मू और कश्मीर में बहुत ऊंचाई पर स्थित एक पल्टन चौकी की कमान कर रहे थे। वहां से लगभग दो किलो-मीटर की दूरी पर बहुत ही दुर्गम इलाके में एक शाखा चौकी थी जिसे इस पल्टन से पहले अलग कर दिया गया था।

2 से 7 मार्च 1979 के बीच भारी हिमपात के कारण शाखा चौकी और पल्टन चौकी के बीच रेडियो और टेलीफान सचार व्यवस्था भंग हो गई थी। संचार व्यवस्था चालू करने के लिए 8 मार्च 1979 को नायब सूबेदार सवाई सिंह अपने गश्ती दल के साथ गश्त पर निकले। रास्ते मे उन्होंने देखा कि पहाड़ की चोटी से एक हिमखंड खिसक रहा है। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए वे आगे बढ़े और वहां से अपने गश्ती दल के अन्य सदस्यों को उस खतरे के बारे में सावधान किया। इस तरह उन्होंने दो बहुमूल्य जाने बचाई। परन्तु इस बीच वे स्वयं हिमखंड की चपेट में आ गए और बाद मे उन्हे गहरी बर्फ के नीचे दबा हुआ मृत पाया गया।

इस प्रकार नायब सूबेदार सवाई सिंह ने सूझ-बूझ, पहलशक्ति और उच्चकोटि के साहस का परिचय दिया।

4 मेजर गुर इकबाल सिंह ढौंडी (आई० सी-16598 ए०)
आर्टिलरी एयर आब्जरवेशन पोस्ट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 जुलाई 1979)

18 जुलाई 1979 की मेजर गुर इकबाल सिंह ढौंडी को जापानी नुन कुन पर्वतारोही दल के गंभीर रूप से बीमार अचेत सदस्य को बर्फ से आच्छादित एक दुर्गम क्षेत्र से निकाल लाने का काम सौंपा गया। उस क्षेत्र मे बर्फानी तूफान प्राय: आते रहते थे और ऐसे इलाके में उड़ान भरना खतरे से खाली नहीं था। लेकिन मेजर गुर इकबाल सिंह ढौंडी इससे घबराए नही। इन्होंने हैलिकाप्टर में उड़ान भरी और एक जगह ग्लेशियर के ऊपर एक ओलडर पर पड़े उस बीमार सदस्य को खोज निकाला। उस समय ये 6,750 मीटर की ऊंचाई पर उड़ रहे थे। ऐसे खतरनाक इलाके में और बहुत खराब मौसम में हैलिकाप्टर का वहां उतारना बड़े जोखिम का काम था और इसे एक कुशल पाइलट ही कर सकता था।

जब इन्होंने पहली बार उतरने की कोशिश की तो देखा कि बादल तेजी से नीचे की ओर आ रहे हैं और उस से नीचे कुछ भी दिखाई नही दे रहा है। ऐसी स्थिति मे हैलिकाप्टर नीचे उतारना सभव नही था। बाद मे इन्होंने देखा कि उतरना बहुत ही खतरनाक था क्योंकि वहां बड़े-बड़े हिमखंड थे और हैलिकाप्टर खड़ा करना असभव था। उसके बाद इन्होंने दूसरी बार कोशिश की। आक्सीजन और खाद्य-सामग्री नीचे

गिराई जो पर्वतारोही दल की जीवन रक्षा के लिए बहुत जरूरी थी। साथ ही विमान को और हल्का करने के लिए दल के नेता को भी आधार शिविर में उतारने का फैसला किया। विमान उतारने की तैयारी करने में समय बीत रहा था और ईंधन और आक्सीजन भी खर्च होता जा रहा था और उधर दिन काफी ढल जाने के कारण प्रकाश भी कम होता जा रहा था। इससे मेजर ढौंडी को बहुत चिन्ता हो रही थी। इसलिए इन्होंने विमान उतारने का दृढ़ निश्चय कर लिया और फिर बड़े-बड़े पत्थरों और हिम दरारों के बीच एक छोटी सी जगह पर उसे उतारा और रात पड़ने से पहले रोगी को वहां से निकाल लाए।

इस कार्रवाई में मेजर गुर इकाबल सिंह ढौंडी ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

5. जी०-59574 एम० टी० ड्राइवर कुप्पास्वामी रामास्वामी,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 जुलाई 1979)

20 जुलाई 1979 को एक परिवहन प्लाटून के (जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स) एम० टी० ड्राइवर कुप्पास्वामी रामास्वामी को कुछ विस्फोटक और अन्य सहायक सामान 428 रोड मेंटनेन्स प्लाटून सैक्टर तक पहुंचाने का काम सौंपा गया था। वहां विस्फोट और सड़क साफ करने के लिए इस सामान की तुरन्त जरूरत थी। गाड़ी जब एक ढलवीं जगह पर पहुंची तो पहाड़ी की ओर से बड़े-बड़े पत्थर लुढ़कते हुए आए और गाड़ी के अगले भाग से टकरा गए जिससे गाड़ी अचानक झटका खाकर रुक गई। स्थिति की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए इन्होंने धैर्य से काम लिया और ऊपर भारी पत्थरों के गिरते रहने से भयभीत हुए बिना अपनी सीट पर बैठे रहे। फिर बड़ी निपुणता से गाड़ी चलाकर उसे वहां से हटा ले गए। इस तरह इन्होंने केवल मूल्यवान सरकारी सामान को ही नष्ट होने से नहीं बचाया बल्कि गाड़ी में यात्रा कर रहे कार्मिकों के बहुमूल्य जीवन की भी रक्षा की।

इस कार्रवाई में एम० टी० ड्राइवर कुप्पास्वामी रामास्वामी ने साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

6. जी-124057 पाइनियर प्रेम सिंह,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 जुलाई 1979)

अरुणाचल प्रदेश में जुलाई 1979 के पहले सप्ताह में हुई भारी वर्षा और तेज बाढ़ के कारण चारखुआर तवांग सड़क का तीन किलोमीटर भाग कई स्थानों पर टूट कर बह गया था। सड़क फिर से चालू करने के लिए नए सिरे से कटाई करनी जरूरी थी। डोजर के नियमित चालक की गैर हाजिरी में पाइनियर प्रेम सिंह ने यह काम संभाल लिया। कटाई के लिए बार-बार विस्फोट और खुदाई की जा रही थी और उधर लगातार वर्षा हो रही थी। इन सब कारणों से ऊपर से चट्टानें बड़े-बड़े पत्थर और मलबा गिरता जा रहा था और वहां डोजर चलना खतरे से खाली नहीं था। इन खतरों की परवाह न करते हुए पाइनियर प्रेम सिंह अपने काम पर डटे रहे। एक के बाद एक टुकड़ा साफ करते रहे और एकपक्षवाड़े से भी कम समय में सड़क फिर चालू कर दी गई।

इस कार्रवाई में पाइनियर प्रेम सिंह ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

7. विंग कमांडर-रणवीर सिंह चौहान (8136)
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 अगस्त, 1979)

विंग कमांडर रणबीर सिंह चौहान ने एम० आई-8 हैलीकाप्टर के साथ विभिन्न प्रकार के सेना के उपस्करों को नीचे लटका कर ले जाने के अधिकतर परीक्षण सफलता पूर्वक पूरे कर लिए थे। 1 अगस्त 1979 को जब ये 2 टन वजन के पुल निर्माण उपस्कर उठाकर दूसरे स्थान पर ले जा रहे थे तो भार उठाने वाली चार, रस्सियों में से एक टूट गई। जिससे हैलीकाप्टर बेकाबू हो गया और डावांडोल होकर चक्कर काटने लगा।

जब हैलीकाप्टर को काबू में लाने का और कोई तरीका नहीं दिखाई दिया तो विंग कमांडर चौहान ने भार को नीचे फैंक देने का फैसला किया। लेकिन इन्होंने देखा कि उस समय विमान आबादी वाले इलाके के ऊपर उड़ रहा है और वहां इतना भारी सामान गिराने से लोगों की जानें जा सकती हैं। इसलिए कोशिश करके विमान को आबादी वाले इलाके से दूर ले आए परन्तु भार को नीचे नहीं फैंक सके क्योंकि ज्यादा खिचाव के कारण विद्युत नियंत्रण की तार टूट गई थी और तब तक विमान काबू से बाहर हो गया था। फिर भी विंग कमांडर चौहान विचलित नहीं हुए और जैसे ही भार जमीन पर लगा इन्होंने हैलीकाप्टर को जमीन पर उतार दिया जिससे विमान की और नुकसान नहीं हो पाया और उसके कार्मिकों को भी कोई चोट नहीं आई।

इस कार्रवाई में विंग कमांडर रणबीर सिंह चौहान ने साहस, सूझ-बूझ और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

8. जी-10097 एम० टी० ड्राइवर मोदी लाल सिंह,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 सितम्बर, 1979)

4 सितम्बर, 1979 को प्रातः लगभग 9.15 बजे सड़क निर्माण कम्पनी (जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स) के कमांडिंग अफसर एक प्रशासनिक पर्यवेक्षक के साथ मिजोरम में ऐजल-लुंगलेह सड़क पर सड़क निर्माण कार्य और कैम्पों का निरीक्षण करने के लिए जोगा में सरचिप के लिए रवाना हुए। रास्ते में विरोधियों ने जोगा पर निकट से ही गोली बारी शुरू कर दी। ड्राइवर मोदी लाल सिंह ने यह सोचकर कि सुरक्षा की दृष्टि से इस क्षेत्र से हट जाना ठीक होगा, गाड़ी चलाते रहने का निश्चय किया। विरोधियों की लगातार गोलीबारी से गाड़ी की विंडस्क्रीन चकनाचूर हो गई थी और गाड़ी के पीछे का बांया पहिया भी पंचर हो गया था। लेकिन इससे ये विचलित नहीं हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना गाड़ी की कुशलता के साथ चलाते रहे और शीघ्र ही विरोधियों की गोलाबारी रेंज से बाहर निकलने में सफल हो गए। इस तरह इन्होंने तीन व्यक्तियों की प्राण रक्षा की।

इस कार्रवाई में एम० टी० ड्राइवर मोदी लाल सिंह ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

9. 13854348 सिपाही प्रणय कुमार बाला
सेना सेवा कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 सितम्बर, 1979)

सिपाही प्रणय कुमार बाला 6 सितम्बर, 1979 को रेल के एक सैनिक डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। ये इस डिब्बे में सिलचर रेलवे स्टेशन से सवार हुए थे। सायं 7 30 बजे के लगभग जब रेल एक स्टेशन पर पहुंची तो पत्थर बरसाती एक भीड़ ने बड़ी तेजी से उस सैनिक डिब्बे पर धावा बोल दिया। खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए, कई सैनिक कार्मिकों को घायल कर दिया, उनका सामान लूट लिया और दो सैनिकों को खींचकर डिब्बे से बाहर निकाल दिया। इसे देखकर सिपाही बाला डिब्बे से बाहर आए और पास में राइफल लिए हुए 3 सशस्त्र पुलिस कर्मचारियों को मदद के लिए बुलाया लेकिन उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। इन्होंने भीड़ को समझा बुझाकर शांत रहने और वहां से हटने का अनुरोध किया लेकिन भीड़ पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

बाद में जब इन्होंने देखा कि कुछ शरारती तत्व उनके डिब्बे को आग लगाने की कोशिश कर रहे हैं तो इन्होंने झपटकर पुलिस के एक सिपाही से राइफल और गोला बारूद छीना और हवा में गोली चला दी। इससे शरारती तत्व घबरा गए और भीड़ तितर-बितर हो गई। हालांकि हाथापाई में सिपाही बाला के माथे में भी कुछ घाव हो गए थे लेकिन ये रात भर और सुबह मदद पहुंचने तक डिब्बे के बाहर पहरा देते रहे।

इस कार्रवाई में सिपाही प्रणय कुमार बाला ने उच्च कोटि की पहल शक्ति, कार्य कुशलता और साहस का परिचय दिया ।

10 जी०-123917 पाइनियर चिन्ना राजू,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 अक्तूबर, 1979)

दुनली क्षेत्र में 2 से 4 अक्तूबर, 1979 के दौरान हुई भारी वर्षा के कारण चिल्लू नाले में अभूतपूर्व बाढ़ आ गई थी । नाले के उस ओर पहाड़ काट कर सड़क बनाने के काम में लगे एक डोज़र के नीचे से भूमि कटाव के कारण उसके बह जाने का खतरा पैदा हो गया था । पाइनियर चिन्ना राजू का डोज़र चलाना आता था इसलिए इन्हें उसे चलाने का काम सौंपा गया था । 4 अक्तूबर, 1979 को इन्होंने यह निश्चय किया कि वे उस डोज़र को चिल्लू नाले के पार सुरक्षित स्थान पर ले जाएंगे । नाले में पानी का बहाव बहुत तेज़ था और ऐसी हालत में डोज़र नाले से पार ले जाना खतरे से खाली नहीं था । पर, उस खतरे की परवाह किए बिना ये डोज़र को नाले के पार ले जाने में सफल हो गए और डोज़र बचा लिया । लेकिन जैसे ही डोज़र वहां से हटाया तो सड़क का वह भाग, जहां डोज़र खड़ा किया था, पानी में बह गया और पाइनियर चिन्ना राजू को दो दिन तक वहां असहाय अवस्था में रुकना पड़ा ।

इस कार्रवाई में पाइनियर चिन्ना राजू ने साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

11 जे० सी० 794386 नायब सूबेदार बचन सिंह,
गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि . 5 अक्तूबर, 1979)

5 अक्तूबर, 1979, को 20 अन्य सिपाहियों के साथ नायब सूबेदार बचन सिंह को दक्षिण मिज़ोरम के परवा सेक्टर में उस स्थान पर छापा मारने के लिए भेजा गया था जहां विरोधियों के छिपे होने की आशंका थी । घने जंगल और दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों का पार करता हुआ इनका दल इन झोंपड़ियों के पास पहुंचा जहां विरोधी छिपे हुए थे । इन्होंने दल इनकी दो टुकड़ियों में बांट दिया । एक टुकड़ी का खुद नेतृत्व करते हुए इन्होंने विरोधियों पर अचानक छापा मार कर उन्हें जीवित पकड़ने की योजना बनाई और सिपाहियों को आदेश दिया कि वे गोली चलाकर विरोधियों को चौकन्ना न करें । फिर दोनों टुकड़ियों ने विरोधियों पर आक्रमण कर दिया जिससे वे घबरा गए और उनमें से कुछ ने भागने की कोशिश की । इस पर इन्होंने अपने तीन सिपाहियों को भागने वाले विरोधियों का पीछा करने को कहा और टुकड़ी के शेष लोग दूसरी झोंपड़ी में गोली चलाते रहे । अन्य सिपाही विरोधियों पर जवाबी हमला करते रहे । इस मुठभेड़ में दो विरोधी मारे गए और तीन राइफलें और गोला बारूद समेत एक को जिन्दा पकड़ लिया गया । इस तरह इन्होंने अपने मिशन में सफलता प्राप्त की ।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार बचन सिंह ने उच्च कोटि के नेतृत्व और साहस का परिचय दिया ।

12 4042501 लांस हवलदार दयाल सिंह,
गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 अक्तूबर, 1979)

लांस हवलदार दयाल सिंह दक्षिण मिज़ोरम के परवा सैक्टर में विरोधियों के एक ठिकाने पर छापा मारने के लिए भेजी गई टुकड़ी के सैक्शन इन कमान थे । 4 अक्तूबर 1979 को लांस हवलदार दयाल सिंह और इनकी टुकड़ी के पांच अन्य सिपाहियों को एक ऐसी झोंपड़ी पर छापा मारने का आदेश दिया गया, जिसमें हथियारों से लैस दो विरोधियों के छिपे होने का संदेह था । आधी रात के करीब जब ये झोंपड़ी से लगभग 70 मीटर की दूरी पर पहुंचे तो विरोधियों ने इन पर गोलियों की बौछार कर दी । गोलियों की परवाह किए बिना लांस हवलदार दयाल सिंह आगे बढ़े और अपने साथियों को विरोधियों के ठिकाने पर धावा करने का आदेश दिया । इस मुठभेड़ में कन्धे पर गोली लगने के बावजूद इन्होंने विरोधियों पर धावा जारी रखा । हालांकि इनके घाव से खून बह रहा था, फिर भी ये एक भागते हुए विरोधी पर झपट पड़े और हथियार सहित उसे जिन्दा पकड़ लिया । इस मुठभेड़ में इनके एक साथी को भी गहरी चोट आ गई थी और वह अचेत हो गया था । लांस हवलदार दयाल सिंह ने अपना इलाज करवाने से पहले अपने साथी का इलाज करवाने की व्यवस्था की । वापस आते हुए गंभीर रूप से जख्मी होने के बावजूद इन्होंने स्ट्रेचर पर आने से मना कर दिया ।

इस कार्रवाई में लांस हवलदार दयाल सिंह ने उच्च कोटि का साहस दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया ।

13. फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट चन्द्रशेखर जयवन्त (13587),
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 12 अक्तूबर, 1979)

12 अक्तूबर, 1979 को फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट चन्द्रशेखर जयवन्त एक अजीत विमान को हिन्डन से श्रीनगर ले जा रहे थे । जब ये हवाई अड्डे से कुछ दूर 1400 मीटर की ऊंचाई पर उड़ रहे थे तो अचानक विमान का इंजन बन्द हो गया लेकिन फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जयवन्त घबराए नहीं । इन्होंने बड़ी कुशलता से सारी स्थिति का जायज़ा लिया । इंजन को चालू करने की दो बार कोशिश की लेकिन दोनों कोशिशें नाकाम रहीं । इन्होंने यह समझ लिया कि विमान की ऊंचाई कम होने के कारण हवाई पट्टी पर कम गति से उतरना संभव नहीं है । इसलिए इन्होंने ट्रैफिक कन्ट्रोल के निर्देशों के विरुद्ध विमान को हवाई पट्टी पर उतारने का फैसला किया और ट्रैफिक कन्ट्रोल को सूचित किया कि वे इसके लिए हवाई पट्टी खुली रखें । फिर इन्होंने विमान को कोई हानि पहुंचाए बिना पहली बार बन्द इंजन वाले अजीत विमान को सफलता पूर्वक नीचे उतार दिया ।

इस प्रकार फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चन्द्रशेखर जयवन्त ने साहस, सूझबूझ तथा उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

14. कैप्टन रघुविन्दर कपूर (आई० सी०-30176)
1, गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 दिसम्बर, 1979)

इम्फाल और उसकी घाटी में उग्रवादियों का एक गिरोह बड़ा आतंक फैलाए हुए था जो नवम्बर, 1979 के दौरान मणिपुर के शहरी क्षेत्रों में कई तरह की देशद्रोही हरकतें कर चुका था । कैप्टन रघुविन्दर कपूर को इन उग्रवादियों को पकड़ने का काम सौंपा गया ।

जब कैप्टन कपूर को यह सूचना मिली कि उक्त गिरोह 4 दिसम्बर, 1979 को गांव के एक कुख्यात अपराधी के घर में आने वाला है तो कैप्टन कपूर ने उसके घर छापा मारा और दो नौजवानों को पकड़ लिया । इन दोनों से मिली सूचना के आधार पर इनौचा सिंह नाम उग्रवादी को दूसरे गांव से पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया ।

दिसम्बर, 1979 और जनवरी, 1980 के दौरान मणिपुर विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष और भूतपूर्व वित्त मंत्री पर कातिलाना हमला होने तथा उग्रवादियों द्वारा एक प्रसिद्ध नेता को उसी के घर पर मार डालने के कारण वहां स्थिति बिगड़ती जा रही थी । इस समस्या से निपटने के लिए कैप्टन रघुविन्दर कपूर ने सिविल प्रशासन के साथ निकट सम्बन्ध सहयोग और सम्पर्क स्थापित करके ऐसी व्यवस्था कायम कर दी जिससे उग्रवादियों की हर गतिविधि का पता चलता रहे । इन स्रोतों से प्राप्त सूचना के आधार पर इन्होंने कई ऐसे निर्मम हत्यारे उग्रवादियों को गिरफ्तार किया जिनके खिलाफ हत्या, लूटपाट और आगजनी के मामले दर्ज थे और जिनके कारण वहां की जनता भयभीत हो गई थी । कुछ हथियार, गोला-बारूद और महत्वपूर्ण दस्तावेज़ भी जब्त किए गए ।

इस कार्रवाई में कैप्टन रघुविन्दर कपूर ने उच्च कोटि के दृढ़ निश्चय, नेतृत्व और साहस का परिचय दिया ।

15. फ्लाइंग अफसर प्रमोद कुमार जैन (15017),
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 दिसम्बर, 1979)

4 दिसम्बर, 1979 को फ्लाइंग अफसर प्रमोद कुमार जैन हवाई युद्ध प्रशिक्षण उड़ान भर रहे थे। ये अभी बेस से लगभग 80 किलोमीटर दूर ही गए थे कि इनके विमान के जेनरेटर ने काम करना बंद कर दिया। इसके बाद बिजली बिल्कुल बन्द हो गई जिससे ये कम्पास और रेडियो टेलीफोन का उपयोग न कर सकें। उस समय स्थिति और भी भयंकर हो गई जब बैटरी और बिजली में लगी आग से काकपिट विषैली गैस और घने धुएं से भर गया। इससे इन्हें न केवल देखने में कठिनाई होने लगी बल्कि उनकी बैचेनी भी बढ़ गई। किसी प्रशिक्षणाधीन युवा पायलट के लिए यह एक गंभीर स्थिति थी। परन्तु फ्लाइंग अफसर जैन ने अपना धैर्य नहीं खोया और ऐसी स्थिति में जिस प्रकार कार्य करना चाहिए उसके अनुसार काम करते हुए अपने बेस की ओर चल पड़े। यह उनकी व्यावसायिक कुशलता का परिणाम था कि टेल पैराशूट और ब्रेकिंग सिस्टम सहित हर प्रकार की मशीनी सहायता न मिलने पर भी इन्होंने विमान को और किसी प्रकार की क्षति पहुंचाए बिना नीचे उतार लिया।

इस प्रकार फ्लाइंग अफसर प्रमोद कुमार जैन ने साहस, सूझबूझ और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

16. फ्लाइंग अफसर राहुल धर (14561),
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि . 10 जनवरी, 1980)

10 जनवरी, 1980 को फ्लाइंग अफसर राहुल धर एक जेट विमान उड़ा रहे थे। इन्हें अचानक एहसास हुआ कि इनके विमान के इंजन ने काम करना बन्द कर दिया है। इन्होंने इंजन को चालू करने की तीन बार कोशिश की पर सफल नहीं हुए और विमान नीचे होता गया। इस संकटमय स्थिति में भी इन्होंने हिम्मत से काम लिया और विमान से कूदने की बजाए उसे सुरक्षित नीचे उतारने का निश्चय किया। जब तक ये अधिक समय लेने वाली संकटकालीन प्रणाली से अण्डरकैरिज को नीचे कर सके क्योंकि उसका हाइड्रोलिक कंट्रोल अचानक बंद हो गया था, तब तक इन्होंने देखा कि उनका विमान बहुत ऊंचाई और सामान्य से 70 नॉट अधिक की तेज गति से हवाई पट्टी की ओर जा रहा है। यह जानते हुए कि इस प्रकार तेज गति से उतरने के कितने भयंकर परिणाम हो सकते हैं इन्होंने विमान के 'फ्लोट' को नियंत्रण में रखा और इतनी तेज रफ्तार में ही हवाई पट्टी के मध्य में विमान को उतार दिया। यहां भी इन्हें समान रूप से भयंकर स्थिति का सामना करना पड़ा क्योंकि हवाई पट्टी पर जिस गति से विमान दौड़ रहा था उससे लगता था कि वह जल्दी हवाई पट्टी से बाहर चला जाएगा और तेज ब्रेक लगाकर विमान को रोकने में भी भयंकर खतरा था। अतः इन्होंने अपनी व्यावसायिक कुशलता का पूरा उपयोग किया और हवाई पट्टी के अंतिम छोर पर विमान को सुरक्षित रोक दिया।

इस कार्रवाई में फ्लाईंग अफसर राहुल धर ने साहस, सूझ बूझ और उच्च कोटि का व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

17. 260583 सार्जेंट शेर सिंह कादिअन,
रडार फिटर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 11 फरवरी, 1980)

11 फरवरी, 1980 की शाम को करीब 7.45 बजे सिगनल यूनिट के टावर "ए" में आग लग गई। उसमें बहुत ही आधुनिक और कीमती इलैक्ट्रानिकी उपस्कर रखे हुए थे कुछ ही क्षणों में टावर का डैक गहरे धुएं और जहरीली गैस से भर गया। गर्मी के कारण डैक में घुसना लगभग असंभव हो गया था तथा अत्यधिक धुएं की वजह से यह मालूम करना भी कठिन था कि आग कहां से शुरू हुई है।

सार्जेंट शेर सिंह कादिअन उस समय ड्यूटी पर नहीं थे लेकिन आग के खतरे की घंटी सुनते ही ये तुरंत टावर के पास पहुंच गए। आग की गर्मी और धुएं की परवाह किए बिना ये एक फायर हौज लेकर डैक में घुसे और वहां देखा कि नट-बोल्टों से कसी हुई एक बंद केबिनेट में आग लगी हुई है। यह जानकर कि आग के स्रोत तक वाटर जैट को ले जाना संभव नहीं है, ये भाग कर नीचे गए और नट खोलने के लिए पेचकस लेकर आए। केबिनेट को खोलने समय धुएं और जहरीली गैस से इनका दम घुट रहा था, फिर भी अन्ततः इन्होंने आग पर काबू पा ही लिया।

इस कार्रवाई में सार्जेंट शेर सिंह कादिअन ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. जी-7844 चार्जमैन करनैल सिंह,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि . 18 फरवरी, 1980)

18 फरवरी, 1980 को खेत-सौंजी क्षेत्र में पहाड़ काट कर सड़क निर्माण कार्य के दौरान मिट्टी को हटाते समय एक डोजर 63 मीटर नीचे नाले में गिर गया था और वहां औंधा पड़ा हुआ था। उस जगह पर आसानी से नहीं पहुंचा जा सकता था क्योंकि डोजर के दोनों तरफ सीधी सपाट पहाड़ी थी। चार्जमैन करनैल सिंह को डोजर निकाल लाने का काम सौंपा गया। अपने जीवन की परवाह न करते हुए खराब मौसम तथा जोखिमपूर्ण सीधी ढलान के बावजूद, चार्जमैन करनैल सिंह ने अपने सिपाहियों को संगठित किया और आवश्यक सामान लेकर डोजर निकालने के लिए चल दिए। पहाड़ी ढलान पर दलदली मिट्टी में पड़ा डोजर धीरे-धीरे नीचे की ओर खिसकता जा रहा था। वहां पहुंचकर चार्जमैन करनैल सिंह और इनके साथी तीन दिन तक कठिन परिश्रम करते रहे और अन्ततः डोजर को घटनास्थल से एक किलोमीटर दूर सुरक्षित और समतल जमीन पर ले जाने में सफल हो गए।

इस कार्रवाई में चार्जमैन करनैल सिंह ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. 5443541 लांस नायक गिरि बहादुर धरती,
5 गोरखा राइफल्स (एफ० एफ०)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि, 2 मार्च, 1980)

1 मार्च, 1980 को जम्मू और कश्मीर नियंत्रण रेखा के उस पार के सैन्य दलों ने अकारण ही हमारी एक चौकी पर स्वचालित शस्त्रों से गोलाबारी शुरू कर दी। हमारी चौकी के चारों तरफ आग लगाने के लिए ट्रेसर गोलियां छोड़ी और जब हमारा सैन्यदल उस आग को बुझाने के लिए बाहर निकला तो उन पर भी गोली चलानी शुरू कर दी। चौकी के आस-पास की झाड़ियां जल कर राख हो गईं और वहां के दो बंकरों में असहनीय गर्मी और घना धुआं भर गया। झाड़ियों की आग बुझाने के लिए सबसे अधिक जरूरी यह था कि नियंत्रण रेखा के उस पार से हो रही गोली बारी को रोका जाए।

एक बंकर में बैठे लांस नायक गिरि बहादुर धरती को जवाबी कार्रवाई करने का आदेश दिया गया। असहनीय गर्मी और चारों ओर घने धुएं के कारण ठीक न देखने के बावजूद इन्होंने जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी और नियंत्रण रेखा के उस पार से हो रही गोली बारी का मुंह बंद करा दिया।

इस कार्रवाई में लांस नायक गिरि बहादुर धरती ने असाधारण साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. जी-22119 मेट केदार सिंह, (मरणोपरान्त)
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 मार्च, 1980)

20 मार्च, 1980 को सांय सवा छः बजे मिजोरम में सरचिप थिंगजवाल सड़क पर सड़क-निर्माण कैंप के कार्मिक हाजिरी लगाने के लिए इकट्ठे हो रहे थे, तो स्वचालित हथियारों से लैस विरोधियों की एक टुकड़ी ने इन पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी और बाद में कैंप में आग लगा दी। मेट केदार सिंह ने अपने जीवन की परवाह किए बिना

आगे बढ़ कर विरोधियों को ललकारा। कैंप के अन्य कार्मिकों को उनसे निबटने के लिए कह कर अकेले ही आग बुझाने में लग गए ताकि आग से जान-माल का नुकसान होने से बचाया जा सके। इसी बीच विरोधियों की एक गोली उन्हें लगी और घटनास्थल पर ही निधन हो गया।

इस कार्रवाई में मेट केदार सिंह ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. जी-63028 एम० टी० ड्राइवर राम सिंह,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 24 मार्च, 1980)

फार्मेशन कटिंग प्लाटून (जी० आर० ई० एफ०) का एम० टी० ड्राइवर राम सिंह 24 मार्च, 1980 को मिजोरम में सिलचर से खैरलियान तक पुल निर्माण का सामान ले जा रहा था। लगभग 12.10 बजे अपराह्न इनकी गाड़ी सिलचर-ऐजल रोड़ पर 102 वें किलोमीटर पर पहुंची ही थी कि विरोधियों ने स्वचालित हथियारों से इसकी गाड़ी पर गोलाबारी शुरू कर दी। ड्राइवर राम सिंह की टांग में एक गोली लगी और दो गोलियां उनके पुट्ठे से निचले भाग में लगी जिनसे उनके पेट में गंभीर चोट आई। अत्यधिक रक्त-स्राव के बावजूद इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और गाड़ी का अगला पहिया पंचर हो जाने के बावजूद ये उसे विरोधियों की गोलियों की मार से बचा ले गए।

इस कार्यवाई में एम० टी० ड्राईवर राम सिंह ने अनुकरणीय साहस, निर्भीकता, दृढ़ता और उच्च कोटि के व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

22. 2465984 सिपाही रणजोध सिंह,
पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 23 अप्रैल, 1980)

23 अप्रैल, 1980 को सीमा सुरक्षा कार्य दल की एक गाड़ी जब अरुणाचल प्रदेश में उफनते हुए नाले को पार कर रही थी तो धारा के मध्य में पहुंचने पर इंजन में पानी भर गया और गाड़ी वहीं रुक गई। इसमें बैठे ड्राइवर और सहायक इंजीनियर जो मजदूरों को वेतन का भुगतान करने जा रहे थे, गाड़ी की छत पर चढ़ गए और सहायता की पुकार करने लगे। यद्यपि बस से आए अनेक यात्री भी नाले के किनारे पर थे लेकिन सिपाही रणजोध सिंह ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो सहायता के लिए आगे बढ़े।

सिपाही रणजोध सिंह ने तेज धारा के बीच गाड़ी तक 7 मीटर के फासले को पार करने का प्रयत्न किया लेकिन गर्दन तक गहरे पानी तक जाने के बाद वे और आगे नहीं बढ़ सके। फिर ये एक चट्टान के सहारे खड़े हुए और सहायक इंजीनियर को अपना ब्रीफकेस फेंकने के लिए कहा और ब्रीफकेस को हिफाजत से किनारे पर रखा दिया। इसके बाद इन्होंने अपनी पैंट से अपनी पगड़ी को बांधा और इसके एक छोर को सहायक इंजीनियर की ओर फेंका। सहायक इंजीनियर पगड़ी पकड़ कर पानी में कूद आए लेकिन पानी की तेज धारा इन दोनों को ही बहा कर ले गई। सौभाग्य से इनकी पगड़ी एक बड़े पत्थर पर अटक गई और ये तैर कर सहायक इंजीनियर की ओर गए और उन्हें बचा लिया। इस बीच गाड़ी का ड्राइवर अपने आप तैरकर नाले के पार आ गया।

इस कार्यवाई में सिपाही रणजोध सिंह ने उच्च कोटि की पहलशक्ति, दृढ़ता और साहस का परिचय दिया।

23. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुमित मुखर्जी (12925),
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 मई, 1980)

8 मई, 1980 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट सुमित मुखर्जी प्रशिक्षण उड़ान भर रहे थे। लगभग 4900 मीटर की ऊंचाई पर उड़ते हुए इन्होंने महसूस किया कि विमान के अगले बियरिंग ने काम करना बन्द कर दिया है और इसके बाद इंजन भी जाम हो गया। तब तक नियंत्रण प्रणाली में इस बात के कोई खास संकेत नहीं आ रहे थे कि विमान किस गति से नीचे आ रहा है। और विमान के अंडरकैरिज और फ्लैपों के उपयोग से संबंधित नियंत्रण प्रणाली किस प्रकार काम कर रही है। अपने जीवन की परवाह न करते हुए इन्होंने अपनी व्यावसायिक कुशलता के बल पर विमान के नीचे उतरने की अंडरकैरिज को खोले और बिना खोले विभिन्न गतियों के बारे में फ्लाइंग कंट्रोल को सूचित किया। विमान के नीचे की ओर आने की गति बहुत तेज होने पर भी अपनी उड़ान कुशलता से ये मूल्यवान विमान को सुरक्षित नीचे उतारने में सफल रहे। विमान का इंजन किन परिस्थितियों में जाम हो जाता है इस बारे में इन्होंने बहुमूल्य सूचना इकट्ठी करने में सहायता की।

इस कार्रवाई में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुमित मुखर्जी ने साहस, सूझ-बूझ और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

24. 2179 ग्राम रक्षक तंघियु खेमनुंगन,
केन्जोंग ग्राम चौकी,
जिला तुएनसांग, नागालैंड

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 13 मई, 1980)

13 मई, 1980 को दिन के लगभग 12.30 बजे, जब केन्जोंग ग्राम के अधिकांश ग्रामवासी अपने-अपने खेतों में काम करने गए हुए थे और केवल 5 ग्राम रक्षक ही वहां थे, तो स्वचालित हथियारों से लैस लगभग 300 भूमिगत विरोधियों ने लगभग 100 कुलियों के साथ गांव में प्रवेश किया। ग्राम रक्षक तंघियु खेमनुंगन ने अपनी जान की परवाह न करते हुए विरोधियों पर गोली चलाई। इस मुठभेड़ में तंघियु खेमनुंगन विरोधियों की गोली से घायल हो गए और पकड़ लिए गए।

इस कार्यवाई में ग्राम रक्षक तंघियु खेमनुंगन ने साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

25. 2163 ग्राम रक्षक त्सांगसोई खेमनुंगन,
केन्जोंग ग्राम चौकी,
जिला तुएनसांग, नागालैंड

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 13 मई, 1980)

13 मई, 1980 को दिन के लगभग 12.30 बजे, जब लगभग सभी ग्रामवासी अपने-अपने खेतों में जा चुके थे और केन्जोंग ग्राम में 5 ग्राम रक्षक ही रह गए थे, तब स्वचालित हथियारों से लैस लगभग 300 भूमिगत विरोधियों ने लगभग 100 कुलियों के साथ केन्जोंग ग्राम में प्रवेश किया। ग्राम रक्षक त्सांगसोई खेमनुंगन ने अपनी जान की परवाह न करते हुए विरोधियों पर गोली चलाई और कुछ विरोधियों को घायल कर दिया, लेकिन इतने अधिक विरोधियों के साथ हुई मुठभेड़ में इन्हें काबू में कर लिया गया।

इस कार्रवाई में ग्राम रक्षक त्सांगसोई खेमनुंगन ने साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. मेजर विजय सिंह (आई० सी०-26079),
जम्मू और कश्मीर राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 16 मई, 1980)

15 मई, 1980 को विरोधियों की गतिविधियों को रोकने के लिए इम्फाल में एक इन्फैन्ट्री बटालियन तैनात की गई।

16 मई, 1980 को इस इलाके में टोह लेने के लिए मेजर विजय सिंह के नेतृत्व में एक गश्ती दल भेजा गया। रास्ते में आ रही जीप में बैठे कुछ व्यक्तियों ने जब इन पर गोली चलाई तो मेजर विजय सिंह ने जवाबी गोली चलाई और जीप में सामने की सीट पर बैठकर गोली चला रहे व्यक्ति को मार दिया। इसके साथ ही ये अपनी गाड़ी से उतरे और अपने साथियों को मोर्चा बांधने के लिए कहा। इसके बाद की मुठभेड़ में तीनों विरोधी घटनास्थल पर ही मारे गए। उनकी जीप तथा हथियार और गोला बारूद कब्जे में ले लिए गए। बाद में शिनाख्त होने पर पता चला कि मृत विरोधियों में से एक व्यक्ति उस इलाके का नामी बदमाश था और लूटमार के कई मामलों में उसकी तलाश थी।

इस कार्यवाई में मेजर विजय सिंह ने अनुकरणीय सूझ-बूझ, दृढ़ता और उच्च कोटि के साहस का परिचय दिया ।

27 5745111 राइफलमैन कृष्ण बहादुर राणा,
8 गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 मई, 1980)

राइफलमैन कृष्ण बहादुर राणा सिक्किम में ऊंची चोटी पर स्थित एक सामरिक महत्व के स्थान पर तैनात थे । 18 मई, 1980 को इन्हें एक एन० सी० ओ० के साथ सैनिक सामान लाने के लिए एक चौकी पर भेजा गया । कोहरे में जब दिखाई भी बहुत कम दे रहा था, ये लोग दुर्गम स्थानों को पार करते हुए चौकी पर पहुंचे, वहां से सामान लिया और वापस चल पड़े । परन्तु रास्ते में इनके आगे चल रहे एन० सी० ओ० अंजाने में सुरंग बिछे इलाके में जा पहुंचे । सुरंग में पैर पड़ते ही विस्फोट हुआ और वे गंभीर रूप से घायल हो गए । राइफलमैन राणा, खतरे की परवाह किए बिना सुरंग बिछे इलाके में घुस गए, और एन० सी० ओ० का प्रथमोपचार किया और फिर अपने कंधों पर लादकर उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले आए । इसके बाद फौरन पास की यूनिट से सहायता प्राप्त की और घायल को नजदीकी चिकित्सा सहायता केन्द्र में पहुंचाया ।

इस कार्यवाई में राइफलमैन कृष्ण बहादुर राणा ने पहलशक्ति, साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

28. 3962863 नायब सुरेन्द्र सिंह,
डोगरा

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 21 मई, 1980)

21 मई, 1980 को जब एक इन्फैन्ट्री बटालियन पंजाब में उधो में कलान गांव के पास कुछ अभ्यास कर रही थी तो सिपाही सुरेन्द्र सिंह ने भारतीय वायुसेना का एक विमान नीचे गिरते हुए देखा । ये तुरंत दुर्घटना-स्थल की ओर दौड़े और वहां पहुंचकर देखा कि विमान में आग लगी हुई है और उसका मलबा चारों ओर बिखरा पड़ा है । नायक सुरेन्द्र सिंह सिपाही हल्का राम को साथ लेकर जलते हुए विमान पर चढ़े और उसकी केनोपी को तोड़कर पायलट के शरीर से बंधे फीते काटकर उसे काकपिट से बाहर निकाल लाए । दुर्भाग्यवश पायलट की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी । इसके बाद, इन दोनों ने गांव वालों की मदद लेकर घटनास्थल के चारों ओर पहरा दिया और सिविल तथा वायुसेना के अधिकारियों के वहां पहुंचने पर उसे उनके सुपुर्द किया ।

इस कार्यवाई में नायक सुरेन्द्र सिंह ने पहल शक्ति, साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

29. 397618 सिपाही हल्का राम,
डोगरा

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 21 मई, 1980)

21 मई, 1980 को जब एक इन्फैन्ट्री बटालियन पंजाब में उधो के कलान गांव के पास अभ्यास कर रही थी तो सिपाही हल्का राम ने भारतीय वायुसेना का एक विमान नीचे गिरता हुआ देखा । ये तुरन्त दुर्घटनास्थल की ओर दौड़े और वहां पहुंचकर देखा कि विमान में आग लगी हुई है और उसका मलबा चारों ओर बिखरा पड़ा है । नायक सुरेन्द्र सिंह के साथ ये जलते हुए विमान पर चढ़े और उसकी केनोपी को तोड़कर पायलट के शरीर में बंधे फीते काटकर उसे काकपिट में बाहर निकाल लाए । दुर्भाग्यवश पायलट की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी । इसके बाद इन दोनों ने गांव वालों की मदद लेकर घटनास्थल के चारों ओर पहरा दिया और सिविल तथा वायुसेना के अधिकारियों के वहां पहुंचने पर उसे उनके सुपुर्द किया ।

इस कार्यवाई में सिपाही हल्का राम ने पहल शक्ति, साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

30. जी० ओ० एन० वाई० ए० सहायक इंजीनियर (सिविल) सुकुमारन हरिदासन,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 30 मई, 1980)

श्री सुकुमारन हरिदासन को श्रीनगर-लेह मार्ग पर गुरेज और गुमरी के बीच 48 किलोमीटर सड़क पर बर्फ साफ करने का काम सौंपा गया था । 16 मार्च को अपने आदमियों और मशीनरी के साथ ये उस बर्फ से ढकी सड़क पर पहुंचे । उस समय भी इस क्षेत्र में काफी हिमपात, भूस्खलन और निरन्तर बर्फानी तूफान आ रहे थे और कई स्थानों पर 15 से 25 मीटर तक बर्फ जमी हुई थी । इस प्रकार खराब मौसम और कठिनाईयों के होने पर श्री हरिदासन रात-दिन काम करते रहे । इन्होंने स्वयं उपस्थित रहकर मजदूरों का मार्ग दर्शन किया और काम भी किया । इससे मजदूर जोश और निष्ठा से काम करने के लिए प्रेरित हुए और इस तरह निर्धारित समय से पहले ही केवल बहत्तर दिन में यह काम पूरा कर लिया ।

इस प्रकार श्री सुकुमारन हरिदासन ने साहस, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

31. जी-116269 सब-ओवरसियर अनापरैक्कल थामस वरगीज,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 मई, 1980)

सब-ओवरसीयर अनापरैक्कल थामस वरगीज को श्रीनगर-लेह मार्ग पर गुरेज और गुमरी के बीच 48 किलोमीटर सड़क पर बर्फ साफ करने का काम सौंपा गया था । इनके नेतृत्व में भेजे गए दल के पास बर्फ साफ करने की बहुत ही पुरानी मशीनें थीं । भारी हिमपात, बर्फानी तूफान और भूस्खलन के बावजूद ये विचलित नहीं हुए । अपने जीवन और सुख-सुविधा की परवाह किए बिना दिन-रात लगातार काम करते रहे । इनके कुशल नेतृत्व और प्रेरक मार्ग-दर्शन में बर्फ साफ करने का काम बहुत कम समय में पूरा हो गया ।

इस प्रकार सब-ओवरसीयर अनापरैक्कल थामस वरगीज ने दृढ़ता, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

32. 4345363 लांस नायक मटगम नोकटे,
असम

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 जून, 1980)

लांस नायक मटगम नोकटे मद्रास में राइफल वर्गीकरण चांदमारी क्षेत्र में सन्तरी की ड्यूटी पर तैनात थे । 4 जून, 1980 को ड्यूटी के दौरान जब इन्होंने देखा कि एक व्यक्ति संदेहास्पद रूप में रेंजों के आस-पास घूम रहा है तो इन्होंने उसे ललकारा । इस पर उस व्यक्ति ने चाकू निकाल लिया और इन्हें चाकू दिखाते हुए वहां से भागने की कोशिश करने लगा । खतरे की परवाह न करते हुए इन्होंने उसका पीछा किया और उसे दबोच लिया । दोनों में हाथापाई हुई जिसमें यद्यपि इन्हें चोटें भी आईं लेकिन उस व्यक्ति से आत्मसमर्पण कराने में ये कामयाब रहे । बाद में पता चला कि यह व्यक्ति एक कुख्यात अपराधी था, जिसने इससे पहले दो डाके डाले थे और तीन महिलाओं के गले की जंजीर खींच कर भागा था ।

इस कार्यवाई में लांस नायक मटगम नोकटे ने बड़ी पहलशक्ति, अनुकरणीय साहस और दृढ़ता का परिचय दिया ।

33 फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट जयरामन लक्ष्मी नारायणन् (14110),
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 जून, 1980)

18 जून, 1980 को फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट जयरामन लक्ष्मी नारायणन एक अंधेरी रात में मिग विमान की सामान्य प्रशिक्षण उड़ान भर रहे थे । इस प्रकार के अंधेरे में उड़ानें यंत्रों के सहारे भरी जाती हैं । फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट नारायणन इसकी तरह की यह तीसरी उड़ान थी । तलवाड़ा कस्बे के ऊपर लगभग 5000 मीटर की ऊंचाई पर 60 डिग्री का कोण बनाते हुए विमान मोड़ते समय इन्हें इंजन कुछ झुकता हुआ सा दिखाई दिया । इन्होंने विमान को घुमाकर लुढ़कने से रोकने की कोशिश की तो

देखा कि विमान की नियंत्रण प्रणाली जाम हो गई है । लुढ़कता विमान ठीक कस्बे के ऊपर गिरने जा रहा था । ऐसी स्थिति में इन्होंने भांप लिया कि विमान किसी भी समय दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है । अपनी जान बचाने के लिए इनका विमान से कूदना ही उचित होता, परन्तु इन्होंने विमान में बने रहने का फैसला किया और उस कस्बे के ऊपर से विमान दूसरी दिशा में मोड़ने की पुरजोर कोशिश करने लगे ताकि वहां जान-माल का कोई नुकसान न होने पाए । अपनी असाधारण सूझ-बूझ और व्यावसायिक कुशलता से इन्होंने विमान का इंजन फिर से चालू कर दिया जबकि उस समय विमान कस्बे से केवल 600 मीटर की ऊंचाई पर रह गया था । विमान इतने नीचे आ गया था कि यदि इस समय इसे ऊपर न उठाया गया होता तो कुछ ही क्षणों में वह ध्वस्त हो गया होता । इन्होंने एक असाधारण कोटि के विमान उड़ान भरने के कौशल का परिचय दिया और नियंत्रण प्रणाली खराब होने पर भी थके हुए विमान को बाएं मोड़ से सुरक्षित नीचे उतार लाए । कस्बे के लोगों को जान-माल के नुकसान न होने देने की कोशिश में इस नौजवान पायलट ने अपने लिए भारी खतरा मोल ले लिया था । इस तरह इन्होंने अविचलित रहकर असाधारण कोटि की व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया ।

इस कार्यवाई में फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट जयरामन लक्ष्मी नारायणन ने साहस, सूझ-बूझ और बहुत उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

34. मंगीलाल कठैत, लीडिंग एयर क्रू डाइवर (054925-एफ), भारतीय नौसेना

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 जुलाई, 1980)

एक जुलाई, 1980 को बोमोलों तट से दूर समुद्र में एक मछुए की खोज करने तथा उसे बचा लाने के लिए हेलिकाप्टर में एक बचाव दल भेजा गया जिसमें लीडिंग एयर क्रू डाइवर मांगीलाल कठैत भी शामिल थे । लीडिंग एयर क्रू डाइवर कठैत ने जब मछुए को समुद्र की तरफ तेजी से बहता हुआ देखा तो उन्होंने पायलट को उसी तरफ चलने के लिए कहा । वहां इन्होंने देखा कि अपनी जान बचाने के लिए बहुत देर से संघर्ष करते रहने के कारण मछुआ निढाल हो चुका है । ये तुरन्त हेलिकोप्टर से कूदे और तूफानी समुद्र में तैरते हुए मछुए तक पहुंचे, उसके शरीर पर फीते बांधे और हेलिकाप्टर द्वारा दोनों को ऊपर चढ़ा लिए जाने तक सतर्क रहे । इनके इस साहसिक प्रयास से एक डूबते हुए मछुए की जान बच गई ।

इस कार्यवाही में लीडिंग एयर क्रू डाइवर मांगीलाल कठैत ने साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

35. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राजदीप सिंह मान (13612), फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार प्रभावी की तिथि : 14 अगस्त 1980)

14 अगस्त, 1980 को फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट राजदीप सिंह मान एस-22 विमान पर परीक्षण उड़ान भर रहे थे । आकाश में 6 किलोमीटर की ऊंचाई पर जब ये विमान की नियंत्रण प्रणाली की जांच कर रहे थे तो अचानक इन्हें बड़े जोरों का झटका लगा और ये कुछ बेहोश हो गए क्योंकि उनके शरीर पर गुरुत्वाकर्षण अप्रत्याशित रूप से बढ़ गया था । जब तक इन्हें होश आया, इनका विमान जमीन से केवल 2.8 किलोमीटर की ऊंचाई पर रह गया था और 1000 किलोमीटर प्रति घंटा से भी अधिक गति से नीचे की ओर जा रहा था । फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट मान ने तत्काल विमान को नियंत्रण में लाने की कोशिश की और पूरी ताकत लगाकर नीचे उतरने की गति पर काबू पा लिया । लेकिन नियंत्रण प्रणालियों पर बहुत ही मंद गति से असर पड़ा और एक बार फिर इन्हें झटका लगा । इन्हें दिखाई भी कम देने लगा था और इतनी कम ऊंचाई पर इनके फिर बेहोश हो जाने की संभावना थी लेकिन इनको जीवित रहने की प्रबल इच्छा ने इस विकट स्थिति में भी इन्हें उबार दिया और काफी कष्ट सहने, तेज सिर दर्द होने और रीढ़ की हड्डी दुखने के बावजूद यह नौजवान पायलट घबराया नहीं । शांत भाव से इन्होंने विमान को फिर से पूरी तरह काबू में कर लिया और सुरक्षित नीचे उतार लाए । इस तरह इन्होंने विमान नष्ट होने से बचाने के साथ-साथ उसमें आई खराबी के कारणों का पता लगाने के लिए उसे तकनीशियनों को उपलब्ध किया और इस प्रकार संभवत इन्होंने अनेक लोगों की प्राण रक्षा की ।

इस कार्यवाई में फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट राजदीप सिंह मान ने साहस, दृढ़ता, सूझ-बूझ और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

सं० 29-प्रेस/81—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को वीरता के लिए "शौर्य चक्र का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

जी-31341 ड्राइवर मकैनिकल इक्युपमेंट प्रेमचन्द,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 जुलाई, 1979)

अरुणाचल प्रदेश में चार दुआर और तवांग के बीच की सड़क भारी बाढ़ के कारण टूट गई थी । इस सड़क को साफ करने तथा उसे यातायात के लिए पुनः चालू करने का काम सड़क रख-रखाव प्लाटून (जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स) के मकैनिकल इक्युपमेंट ड्राइवर प्रेमचन्द को सौंपा गया था । भारी वर्षा, सड़क की कटाई और उसके लिए किए जा रहे विस्फोटों के कारण बड़ी-बड़ी चट्टानें, पत्थर और मलबा बराबर नीचे गिर रहा था । ऐसी परिस्थितियों में काम करना खतरे से खाली नहीं था पर ये घबराए नहीं और अपने जीवन की परवाह किए बिना काम पर जुट गए । लगभग एक महीने तक लगातार काम करते रहे और अन्ततः सड़क साफ करने में सफल हो गए । इसके साथ-साथ इन्होंने सड़क के एक भाग में नए सिरे से की जा रही कटाई का काम भी बहुत कम समय में पूरा कर दिया ।

इस कार्यवाई में ड्राइवर मकैनिकल इक्युपमेंट प्रेमचन्द ने साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

घी० के० दर, राष्ट्रपति का सचिव

योजना मंत्रालय

सांख्यिकी विभाग

केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन

नई दिल्ली, दिनांक 24 मार्च 1981

सं० ए०13011/2/80-रा० प्र० सर्वे०—II—सांख्यिकी विभाग की दिनांक 27 नवम्बर, 1980 की अधिसूचना स० एम-13011/2/80-रा० प्र० सर्वे०-II में आंशिक संशोधन करते हुए श्री ओ० पी० गुप्ता, हरियाणा सरकार के आर्थिक एवं सांख्यिकी सलाहकार को तत्काल प्रभाव से तथा 19 नवम्बर, 1982 तक श्री आर० पी० चोपड़ा के स्थान पर रा० प्र० सर्वे० सं० की शासी परिषद् का सदस्य नियुक्त किया गया है ।

आर० एन० सक्सेना, उप सचिव

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 7 मार्च 1981

संकल्प

सं० आई०-12011(9)/80-प्लांट (ए)—सरकार ने बल्क चाय के लिए निर्यात नीति संबंधी समिति के सदस्यों की संख्या बढ़ाने का विनिश्चय किया है ताकि इस समिति को और अधिक व्यापक आधार दिया जा सके तथा दो और सदस्यों को शामिल करके गैर-उत्पादक व्यापारिक हितों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जा सके ।

दिनांक 31 जनवरी, 1981 के समसंख्यक संकल्प के पैरा 2(ख) में क्रमांक 6 के बाद निम्नोक्त जोड़ा जायेगा :—

(7) श्री एस० आर० दत्त,
अध्यक्ष, कलकत्ता टी ट्रेडर्स एसोसिएशन,
कलकत्ता ।

(8) श्री डी० के० घोष,
मै० ए० घोष एंड कम्पनी,
कलकत्ता ।

पैरा 2(ग) मे "सचिव" शब्द के स्थान पर "सदस्य-सचिव" शब्द प्रतिस्थापित किया जायेगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र, साधारण में प्रकाशित किया जाये ।

दिनांक 9 मार्च 1981

संकल्प

स० आई०-12011(9)/80-प्लांट (ए)—सरकार ने चाय की मूल्य-घर्षित मदो के लिए निर्यात नीति संबंधी समिति के सदस्यों की संख्या बढाने का विनिश्चय किया है ताकि इस समिति को और अधिक व्यापक आधार दिया जा सके तथा दो और सदस्यों को शामिल करके गैर-उत्पादक व्यापारिक हितो को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जा सके ।

31 जनवरी, 1981 के समसंख्यक संकल्प के पैरा 2(ख) में क्रमांक 6 के बाद निम्नोक्त जोड़ा जायेगा :—

(7) श्री राजेश बहादुर,
अध्यक्ष, लिप्टन (इंडिया) लिमिटेड,
कलकत्ता ।

(8) श्री मो० इर्फान रेन्डेरियन,
मै० जी० ए० रेन्डेरियन,
कलकत्ता ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र साधारण में प्रकाशित किया जाये ।

डी० डब्ल्यू० तेलंग, संयुक्त सचिव

पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्रालय

(पेट्रोलियम विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 23 मार्च 1981

आदेश

विषय—पी० वाई०-3 संरचना (सी) के 69·975 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के लिए पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस की स्वीकृति ।

सं० 12012/13/80 प्रोडक्शन—पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम 5 के उपनियम (1) की धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियो का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा तेल और प्राकृतिक गैस आयोग तेल भवन देहरादून (जिसको इसके बाद आयोग कहा जायेगा) के० पी० वाई०-3 संरचना (सी-I) के 697935 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पेट्रोलियम मिलने की संभावना हेतु एक पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस 26-8-1980 से 4 वर्ष की अवधि के लिए स्वीकृति देती है । इसके विवरण इसके साथ संलग्न अनुसूची "क" में दिये गये हैं :— ।

लाइसेंस की स्वीकृति निम्नलिखित शर्तों पर है :—

(क) अन्वेषण लाइसेंस पेट्रोलियम के संबंध मे होगा ।

(ख) यदि अन्वेषण कार्य के दौरान कोई पदार्थ पाए गए तो आयोग पूर्ण ब्यौरे के साथ उसकी सूचना केन्द्रीय सरकार को देगा ।

(ग) स्वत्व शुल्क (रायल्टी) निम्नलिखित दरों पर ली जायेगी
(i) समस्त अशोधित तेल तथा कैसिंग हैड कंडेन्सेट पर 42/– रु० प्रति मीट्रिक टन या ऐसी दर जो समय समय पर केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित की जायेगी ।
(ii) प्राकृतिक गैस के संबंध म ये दर केन्द्रीय सरकार द्वारा समय समय निर्धारित दर के अनुसार होगी ।
(iii) 'स्वत्व शुल्क' (रायल्टी) की अदायगी, पेट्रोलियम मत्रालय, नई दिल्ली के वेतन तथा लेखा अधिकारी को दी जायेगी ।

(घ) आयोग लाइसेस के अनुसरण मे प्रत्येक माह के प्रथम 30 दिनों में गत माह से प्राप्त समस्त अशोधित तेल की मात्रा, केसिंग हैड कंडेसेंट और प्राकृतिक गैस की मात्रा तथा उस का कुल उचित मूल्य दर्शाने वाला एक पूर्व तथा उचित विवरण केन्द्रीय सरकार को भेजेगा । यह विवरण संलग्न अनुसूची "ख" मे दिये गये प्रपत्र मे भरकर देना होगा ।

(ङ) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम 11 की आवश्यकता के अनुसार आयोग 6000 रुपये की धन राशि प्रतिभूति के रूप मे जमा करेगा ।

(च) आयोग प्रतिवर्ष लाइसेंस के संबंध में एक शुल्क का भुगतान करेगा जिसकी संगणना प्रत्येक वर्ग किलोमीटर या उसके किसी अंश जिसका लाइसेंस मे उल्लेख किया गया हो, निम्नलिखित दरों पर की जायेगी ।

1. लाइसेस के प्रथम वर्ष के लिए 4 रुपये;
2. लाइसेस के द्वितीय वर्ष के लिए 20 रुपये;
3. लाइसेस के तृतीय वर्ष के लिए 100 रुपये;
4. लाइसेंस के चतुर्थ वर्ष के लिए 200 रुपये, और
5. लाइसेंस के नवीनीकरण के प्रथम और द्वितीय वर्ष के 300 रुपये ।

(छ) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम II के उपनियम (3) की आवश्यकतानुसार आयोग को अन्वेषण लाइसेंस के किसी क्षेत्र के किसी भाग को छोड़ देने की स्वतन्त्रता सरकार को दो माह के नोटिस के बाद होगी ।

(ज) आयोग केन्द्रीय सरकार की मांग पर उसको तत्काल तेल तथा प्राकृतिक गैस अन्वेषण के अन्तर्गत पाये गये समस्त खनिज पदार्थों के सबध मे भूवैज्ञानिक आंकड़ो के बारे में एक पूर्ण रिपोर्ट गुप्त रूप से देगा तथा हर छः महीने में निश्चित रूप से केन्द्रीय सकार को समस्त परिचालनों व्यधन तथा अन्वेषण कार्यों के परिणामों के बारे में सूचना देगा ।

(झ) आयोग समुद्र की तलहटी और/या उसके धरातल पर आग लगने संबंधी निवारक उपायों की व्यवस्था करेगा तथा आग बुझाने हेतु हर समय के लिए ऐसे उपकरण, सामान तथा साधन बनाये रखेगा और तीसरी पार्टी और/या सरकार को उतना मुआवजा देगा जितना कि आग लगने से हुई हानि के बारे मे निर्धारित किया जायेगा ।

(ञ) इस अन्वेषण लाइसेंस पर तेल क्षेत्र (नियंत्रण और विकास) अधिनियम 1948 (1948 का 53) और पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के उपबन्ध लागू होंगे ।

(ट) पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस के बारे में प्रयोग केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित एक जैसा दस्तावेज भर कर देगा जो अपतटीय क्षेत्रों के लिए व्यवहार्य होगा।

अनुसूची "क"

इस पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस के अन्तर्गत पी० वाई०–3 संरचना (सी०-1) का अपतटीय क्षेत्र आता है तथा यह अक्षांश 11°, 11', 34" दक्षिण से 11° 18' 43·8" उत्तर तक और देशान्तर 79°, 53' 39" पश्चिम में 80° 01' 48·6" पूर्व के बीच का और मानचित्र में कोने के बिन्दुओं ए, बी, सी और डी को मिलाती हुई रेखा द्वारा चित्रित किया गया है तथा इसका क्षेत्रफल 69·975 वर्ग किलो मीटर है। यह क्षेत्र जहां पर स्थित उसके बिन्दु जिन अक्षांशों और देशान्तरों पर पड़ते हैं तथा उनकी बीच की दूरी निम्नलिखित है :—

	बेयरिंग					
	अक्षांश			देशान्तर		
	डि०	मि०	सै०	डि०	मि०	सै०
1. बिन्दु ए है	11	11	34	79	55	9·6
2. बिन्दु बी है	11	13	27	79	53	39
3 बिन्दु सी है	11	18	43.8	80	00	16.2
4. बिन्दु डी है	11	16	50	80	01	48.6

भूमि पर स्थित तीन प्रमुख स्थानों से दूरी निम्नलिखित है।

नागापट्टनम 57 किलो मीटर

कुड्डालोर 60 किलो मीटर

तजोर 100 किलो मीटर

अनुसूची—ख

आशोधित तेल, केसिंग हैड कंडेंसेट तथा प्राकृतिक गैस के उत्पादन तथा उसके मूल्य सहित मासिक विवरण

पी० वाई०–3 (संरचना सी-एक) के लिए पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस

क्षेत्रफल 69·975 वर्ग किलो मीटर

माह तथा वर्ष

क—अशोधित तेल

कुल प्राप्त किलो लीटरों की सं०	अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये किलो लीटरों की संख्या	केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पेट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये लीटरों की संख्या	कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त किलो लीटरों की संख्या	टिप्पणी
1	2	3	4	5

ख. केसिंग हैड कंडेंसेट

प्राप्त किये गये कुल किलो लीटरों की संख्या	अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये किलो लीटरों की संख्या	केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पेट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये किलो लीटरों की संख्या	कालम 2 और 3 घटाकर प्राप्त किलो लीटरों की संख्या	टिप्पणी
1	2	3	4	5

ग. प्राकृतिक गैस

कुल प्राप्त घन मीटरों की संख्या	अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये गये घन मीटरों की संख्या	केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पेट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये घन मीटरों की संख्या	कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त घन मीटरों की संख्या	टिप्पणी
1	2	3	4	5

एतद्द्वारा मैं, श्री————————————सत्य निष्ठापूर्वक घोषणा एवं पुष्टि करता हूं कि इस विवरण में दी गयी सूचना पूर्णरूपेण सत्य और सही है, उसे सही समझते हुए मैं शुद्ध अन्तःकरण से सत्यनिष्ठा से यह घोषणा करता हूं।

हस्ताक्षर————————

भारत के राष्ट्रपति के आदेश से तथा उनके नाम में हैं।

टी० एन० परमेश्वरन, अवर सचिव

उद्योग मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

तकनीकी विकास महानिदेशालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 मार्च 1981

संकल्प

सं० एफ०/4(4)/76-81—भारत सरकार ने ऊष्मसह उद्योग के विकास के लिये नामिका का इस संकल्प के जारी होने की तिथि से दो वर्ष की अवधि के लिये पुनर्गठन करने का निर्णय किया है, जिसमें निम्नलिखित व्यक्ति होंगे :—

1. डा० एस० एस० घोष, सुन्दर कन्सल्टैंट्स, ई० सी०-46, सेक्टर-1, साल्ट लेक सिटी, कलकत्ता-700064।	अध्यक्ष	ऊष्मसह उद्योग
2. श्री एम० एच० डालमिया, मैसर्स उड़ीसा सीमेंट लि०, 4 सिंदिया हाऊस, नई दिल्ली-110001।	सदस्य	—वही—
3. श्री के० पी० झुनझुनवाला, मैसर्स उड़ीसा इंडस्ट्रीज लि०, उदित नगर, राऊरकेला-769012 (उड़ीसा)।	सदस्य	—वही—
4. श्री अजित सेन, मैसर्स भारत रिफ्रेक्टरीज लि०, भिलाई रिफ्रेक्टरी प्लांट, मरोदा पोस्ट आफिस निवाई, दुर्ग (मध्य प्रदेश)।	सदस्य	निर्माता, सरकारी क्षेत्र
5. श्री बी० वी० आप्पा राव, मुख्य रिफ्रेक्टरीज इंजीनियर, भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई (मध्य प्रदेश)।	सदस्य	उपभोक्ता
6. डा० एन० आर० सरकार, सैन्ट्रल गिलास एंड सिरेमिक, रिसर्च इंस्टीटयूट, पोस्ट आफिस यादवपुर यूनिट, कलकत्ता-700032।	सदस्य	अनुसंधान एवं विकास
7. श्री बी० रामचन्द्रन, मैसर्स मैटालर्जिकल एंड इंजीनियरिंग, कंसल्टैंट (इंडिया) लि०, रांची-700032।	सदस्य	सलाहकार
8. श्री वी० डी० महाजन, जियोलोजिस्ट (वरिष्ठ), जियोलोजीकल सर्वे आफ इंडिया सैंट्रल रीजन, नागपुर।	सदस्य	कच्चा-माल
9. निदेशक/उप-सचिव प्रभारी ऊष्मसह उद्योग, औद्योगिक विकास विभाग, नई दिल्ली।	सदस्य	प्रशासन
10. विकास अधिकारी (ऊष्मसह), तकनीकी विकास महानिदेशालय	सदस्य-सचिव	

(2) नामिका के विचारार्थ विषय निम्नलिखित होंगे :—

(1) उद्योग के विकास की वर्तमान अवस्था पर विचार करना और इसके त्वरित विकास के लिये अभ्युपायों के बारे में सिफारिश करना।

(2) प्रौद्योगिकी और किस्म के उन्नयन सहित प्रौद्योगिक की भावी आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाना।

(3) जिस सीमा तक मानकीकरण कर लिया गया उसकी जांच करना तथा भारतीय मानक संस्थान के परामर्श से और भी मानकीकरण करने के विशिष्ट कार्यक्रमों को विकसित करना।

(4) सामग्री तथा ऊर्जा संरक्षण संबंधी पहलुओं के मानदंडों पर विचार करना।

(5) विभिन्न उद्योगों की आवश्यकताओं का राज्यवार/क्षेत्रवार अध्ययन करना तथा आने वाले वर्षों में बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा करने के लिए और क्षमता उत्पन्न करने के लिए सुझाव देना।

(6) आधुनिकीकरण तथा पुनर्वास।

(7) कोई अन्य उपयुक्त विषय।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेजी जाये। यह भी आदेश दिया जाता है कि आम सूचना के लिए इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

र० रामानुजम, निदेशक (प्रशासन)

कृषि मंत्रालय

(कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 25 मार्च 1981

संकल्प

सं० 19-6/80-पी० पी० एस० (खण्ड 2)—इस मंत्रालय के संकल्प संख्या 19-6/80-पी० पी० एस० दिनांक 21 अक्तूबर, 1980 के क्रम में अब यह निर्णय किया गया है कि दल को 31-7-1981 तक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि दिनांक 6-3-1981 के संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासकों तथा भारत सरकार के मंत्रालयों और विभागों, योजना आयोग, मंत्रिमण्डल सचिवालय, प्रधान मंत्री का सचिवालय, लोक सभा सचिवालय और राज्य सभा सचिवालय को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के० एल० एन० राव, संयुक्त सचिव

शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक मार्च 1981

संकल्प

सं० एफ० 1-5/81-सी० एच०-I—भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली की नियमावली के नियम 13 के साथ पठित नियम 3, में निहित उपबन्धों के अनुसरण में भारत सरकार ने ऐतिहासिक अध्ययन संस्थान, कलकत्ता, के निदेशक प्रोफेसर निहार रंजन राय को 9 अप्रैल, 1981 अथवा परिषद् के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालने की तारीख से, जो भी बाद में हो, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने का निर्णय किया है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रतिलिपि, निदेशक, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् 35 फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली, को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

एम० आर० कोल्हटकर, संयुक्त सचिव

नौवहन और परिवहन मंत्रालय

(नौवहन पक्ष)

नई दिल्ली, दिनांक 5 जनवरी 1981

संकल्प

सं० एस० डब्ल्यू०/एम० टी० एस०(23)/80-एम० टी०—भारत सरकार के भूतपूर्व परिवहन और संचार मंत्रालय (परिवहन विभाग) के संकल्प संख्या 24-एम० टी०(6)/52 दिनांक 17-8-1959 के अनुकरण में, केन्द्रीय सरकार ने इस संकल्प के जारी किए जाने की तारीख से दो वर्षों के लिए व्यापार नौ प्रशिक्षण बोर्ड का पुनः गठन किया है, जो निम्नप्रकार है :—

(1)	श्री चन्द्रभान अठारे पाटिल संसद सदस्य (लोक सभा)	अध्यक्ष
(2)	नौवहन महानिदेशक, बम्बई	उपाध्यक्ष (पदेन)
(3)	श्री एस० के० वैशम्पायन, संसद सदस्य (राज्य सभा)	संसद का प्रतिनिधि
(4)	नौवहन और परिवहन मंत्रालय में व्यापार नौ प्रशिक्षण संस्थानों से संबंधित संयुक्त सचिव।	सदस्य (पदेन)
(5)	संयुक्त सचिव, भारत सरकार, वित्त प्रभाग, नौवहन और परिवहन मंत्रालय	—यथोक्त—
(6)	भारत सरकार के नौ-सलाहकार, बम्बई	—यथोक्त—
(7)	भारत सरकार के मुख्य सर्वेक्षक, बम्बई	—यथोक्त—
(8)	प्रिंसिपल, लाल बहादुर शास्त्री नाटिकल और इंजीनियरिंग कालेज, बम्बई	—यथोक्त—
(9)	कप्तान, अधीक्षक, प्रशिक्षण पोत 'राजेन्द्र', बम्बई।	—यथोक्त—
(10)	निदेशक, समुद्री इंजीनियरी प्रशिक्षण, कलकत्ता	सदस्य (पदेन)
(11)	अधीक्षक, रेटिंग प्रशिक्षण संस्थान 'भद्रा' कलकत्ता	—यथोक्त—
(12)	सहायक शैक्षणिक सलाहकार (टी०), वैस्टर्न रीजनल आफिस, शिक्षा और सांस्कृतिक मंत्रालय, दूसरी मंजिल, इंडस्ट्रियल एशोरेन्स बिल्डिंग, बम्बई।	—यथोक्त—
(13)	नौ प्रशिक्षण के संयुक्त निदेशक, नौसेना मुख्यालय, दिल्ली।	—यथोक्त—
(14)	प्रो० एस० सम्पत्त, सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग।	अखिल भारत तकनीकी शिक्षा परिषद् के प्रतिनिधि
(15)	कैप्टन सी० जी० भूत, मुख्य कार्मिक प्रबंधक, भारतीय नौवहन, निगम लिमिटेड, बम्बई।	भारतीय नौवहन निगम के प्रतिनिधि
(16)	कैप्टेन गोपाल कृष्ण लाजमी, हारबर मास्टर, बम्बई पत्तन न्यास, बम्बई	पत्तन न्यासों के प्रतिनिधि
(17)	श्री टी० एस० गोकुलदास	इंडियन नेशनल शिप-ओनर्ज एसोसिएशन के प्रतिनिधि
(18)	कैप्टन एस० के० मिश्रा	—यथोक्त—
(19)	श्री के० एस० भंडारकर (कप्तान आर० प्रेम चन्द, इंडिया स्टीमशिप कम्पनी लिमिटेड—यदि बोर्ड की बैठक कलकत्ता में हो तो वैकल्पिक प्रतिनिधि)।	ओनर्ज/एजेंट समिति (कर्मीदल), बम्बई/कलकत्ता के प्रतिनिधि
(20)	कप्तान ए० आई० आई० इपे, मैसर्स कामथ एंड को, आगाफो पोस्ट बाक्स नं० 578, कोचीन-682003	फैडरेशन आफ इंडियन चेम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री के प्रतिनिधि।
(21)	श्री के० ई० सुखिया	मैरिटाईम यूनियन आफ इंडिया के प्रतिनिधि।
(22)	श्री लियो बार्नेस	नैशनल यूनियन आफ सीफेयर्ज आफ इंडिया के प्रतिनिधि।
(23)	श्री विजोय मुखर्जी	नैशनल यूनियन आफ सीमेन आफ इंडिया, कलकत्ता के प्रतिनिधि।
(24)	नौवहन उप महानिदेशक, जो मर्चेंट नेवी, ट्रेनिंग कार्य से संबंधित हों।	सदस्य-सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रतिलिपि राष्ट्रपति के निजी और सेना सचिवों, प्रधान मंत्री सचिवालय, मंत्रिमंडल, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, सभी राज्य सरकारों, पत्तन न्यासों, और नौवहन महानिदेशक, बंबई को प्रेषित की जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प सर्वसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

ए० पद्मनाभन, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1981

No. 28-Pres/81.—The President is pleased to approve of the award of "SHAURYA CHAKRA" to the undermentioned persons for acts of gallantry to :—

1. Shri B. K. SRIDHAR RAO (IRLA-2429), Assistant Commandant, Border Security Force.

(*Effective date of the award* : *18th March, 1978*)

On the 18th March, 1978, Shri B. K. Sridhar Rao who was commanding a company at Meluri post in Nagaland, received information that a gang of notorious hostiles was seen moving towards a thick jungle on the borders of our country. Realising that he hardly had any time to make up a detailed plan, he decided to move immediately even though it was dark Shri Rao along with ten of his available men and some additional personnel drawn from another unit set out for the suspected hostile hideout. He reached the area after a strenous night march through dense jungle. After a thorough search of the area of the hostiles hideouts, he divided his group into two parties to achieve surprise and also to bar their escape routes. He entered the hostiles camp stealthily with a smaller force without caring for the likely strength of the hostiles. He crawled towards the hut and pounced upon the hostile manning the entrance and snatched his rifle. By then other members of his party also closed in and charged at the hostiles. In this encounter, except the one hostile who was killed when he tried to snatch the rifle from one of his men, all the other twenty one hostiles, who were trying to escape towards the border, were captured alive along with arms, ammunition, documents and other stores.

In this action, Shri B. K. Sridhar Rao displayed leadership, devotion to duty and courage of a high order.

2. Captain HARSH KAUL (IC-30858), 5 Gorkha Rifles (FF).

(*Effective date of the award* : *16th January, 1979*)

On 4/5th January, 1979, a gang of hostiles from Nagaland committed a carnage of innocent residents of a village located in an area near the border of Assam and Nagaland. On the night between 15/16th January, 1979, Captain Harsh Kaul was entrusted with the task of raiding a suspected hideout to apprehend the miscreants. Despite the short notice, he planned the raid meticulously and reached the village where the suspects were hiding. He personally led the assault himself and captured 34 hostiles along with eleven weapons. This achievement of Captain Kaul helped restoring the morale and confidence of the people and the civil administrative authorities.

In this action, Captain Harsh Kaul displayed commendable leadership, tact and courage of a high order.

3. JC 84782 Naib Subedar SAWAI SINGH, Rajputana Rifles.

(Posthumous)

(*Effective date of the award* : *8th March, 1979*)

Naib Subedar Sawai Singh was in command of a platoon post located at high altitude in Jammu and Kashmir. A section post, which was detached from the platoon earlier, had been located approximately two kilometres away in a very inhospitable terrain.

Due to heavy snowfall between the 2nd and the 7th March, 1979, the radio and telephone communication between the section and platoon posts had got disrupted. On the 8th March, 1979, Naib Subedar Sawai Singh took out a patrol to establish communication with the section post. On the way, he noticed an avalanche drifting down from the hill top. Unmindful of his personal safety, he moved ahead and warned the other member of the patrol of the approaching hazard. Thereby, he saved two precious lives. In the process, however, he was himself carried away by the avalanche and was later found dead, buried in deep snow.

Naib Subedar Sawai Singh thus displayed presence of mind, initiative and courage of a high order.

4. Major GUR IQBAL SINGH DHODI (IC-16598A), Artillery/Air Observation Post.

(*Effective date of the award* : *18th July, 1979*)

On the 18th July, 1979, Major Gur Iqbal Singh Dhodi was detailed to evacuate a dangerously ill comatose member of the Japanese Nun Kun mountaineering expedition from an inhospitable snow covered terrain prone to stormy weather. Undaunted by the adverse conditions and the flying hazards involved, he took off in his helicopter and located the patient lying on a boulder strewn glacier with deep crevasses. Manoeuvring the aircraft, flying at a height of about 6,750 metres in extremely bad weather and landing at such a hazardous place required high professional competence.

When Major Dhodi made the first attempt to land, it was thwarted as his view was obscured by rapidly drifting low cloud. He, however, observed that it would have been disastrous to land at that spot as it was located amidst huge boulders where manoeuvring the aircraft was not possible. He then made a second pass and, after airdropping vital life preserving oxygen and food, he decided to lighten his aircraft by disembarking the team leader at the Base Camp. The considerable time, fuel and oxygen spent in making preparatory efforts for the landing and the growing low visibility due to approaching night, were causing concern to Major Dhodi. He, therefore, made a determined bid, landed the helicopter in a small area amidst crevasses and enormous boulders and evacuated the casualty before the night came on.

In this action, Major Gur Iqbal Singh Dhodi displayed courage, determination and professional competence of a high order.

5. G-59574. MT Driver KUPPASWAMY RAMASWAMY, General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of the award* : *20th July, 1979*)

On the 20th July, 1979, MT Driver Kuppaswamy Ramaswamy of a Transport Platoon (GREF) was detailed to transport explosives and other accessories to 428 Road Maintenance Platoon Sector where these were urgently required for blasting and road clearing purpose. When the vehicle reached a slide point, huge boulders, which came rolling down from the hill side, hit the force-portion of the vehicle and the vehicle came to a halt with a sudden jerk. Realising the seriousness of the situation, he maintained his presence of mind and undeterred by the falling boulders, he stuck to his seat and, by skiltully manoeuvering the vehicle, drove it away from the spot. Thereby, he not only saved costly Government stores from destruction but also precious lives of personnel travelling by the vehicle.

In this action, MT Driver Kuppaswamy Ramaswamy displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

6. G-124057 Pioneer PREM SINGH, General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of the award* : *30th July, 1979*)

In the first week of July, 1979, heavy rains and flash floods washed away at various points, the road formation on a three kilometre stretch of Charduar—Tawang road in Arunachal Pradesh. In the absence of a regular operator, Pioneer Prem Singh voluntarily agreed to operate the dozer for a new formation cut to restore the road for traffic. During the execution of the work on account of alternate blasting, drilling and continuous rain, chunks of rock, boulders and mud kept rolling down continuously which made operating the dozer a hazardous task. In utter disregard to these hazards, Pioneer Prem Singh struck to his job with determination. He continued clearing slide after slide and opened the road for traffic within a period of less than a fortnight.

In this action, Pioneer Prem Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

7. Wing Commander RANBIR SINGH CHAUHAN (8136) Flying (Pilot).

(*Effective date of the award* : *1st August, 1979*)

On the 1st August, 1979, Wing Commander Ranbir Singh Chauhan, who had successfully completed most of the underslung load trials of various types of Army equipment on MI-8 helicopter, was engaged in lifting and transporting bridging equipment weighing about two tonnes. In the course of this trial, one of the four load suspending cables snapped and caused the aircraft to oscillate and gyrate in an uncontrollable manner.

When, finding no other alternative to control the aircraft, Wing Commander Chauhan decided to jettison the load, he observed that he was flying over a populated area where the heavy load could cause a human disaster. He, therefore, manoeuvered the aircraft away from the inhabited area but he could not jettison the load as the electric control cable got snapped due to heavy strain. The aircraft had by that time gone out of control. However, Wing Commander Chauhan did not lose his presence of mind and, as soon as the load hit the ground, he managed to land the aircraft without any further damage to it and with its crew un-harmed.

In this action, Wing Commander Ranbir Singh Chauhan displayed courage, presence of mind and professional skill of a high order.

8. G-10097 MT Driver MODI LAL SINGH,
General Reserve Engineer Force

(Effective date of the award : 4th September, 1979)

On the 4th September, 1979, at about 9.15 a.m. the Officer Commanding of a Road Construction Company (GREF), accompanied by an Administrative Supervisor, left for Serchip in a Jonga to inspect road construction work and various Camps on Aijal lunglan road in Mizoram. While on the way the hostiles started firing at the Jonga from a close range. Realising that it would be safe to get away from the area, Driver Modi Lal Singh decided to continue driving the vehicle. The constant firing by the hostiles had completely smashed the wind-screen and had punctured the left rear wheel of the vehicle. Undeterred by this and in complete disregard to his own safety, he kept on driving the vehicle skilfully and soon succeeded in saving three lives when he got clear of the range of the hostile fire.

In this action, MT Driver Modi Lal Singh displayed courage, determination and professional skill of a very high order.

9. 13854348 Sepoy PRANAY KUMAR BALA,
Army Service Corps.

(Effective date of the award : 6th September, 1979)

On the 6th September, 1979, Sepoy Pranay Kumar Bala was travelling in a military compartment of a train which he boarded at Silchar Railway Station. At about 1930 hours, when the train arrived at a station, a stone pelting mob attacked the military compartment. After breaking the window panes and injuring several Service Personnel, the mob looted their belongings and dragged out two of them. Seeing this, Sepoy Bala came out of the compartment and requested the three armed Police personnel, standing nearby, for help, but they did not heed. His efforts to pacify and persuade the mob to disperse were also unsuccessful.

Subsequently, when he saw some miscreants trying to set fire to the bogie, Sepoy Pranay Kumar Bala snatched a rifle and ammunition from one of the Police personnel and fired into the air. This un-nerved the miscreants and the mob dispersed. Although Sepoy Bala had also sustained lacerated wounds on his head in the scuffle, undeterred by these, he stood guard outside the compartment throughout the night till the following morning when succour arrived.

In this action, Sepoy Pranay Kumar Bala displayed initiative, tact and courage of a high order.

10. G-123917 Pioneer CHINNA RAJU,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 4th October, 1979)

Heavy downpour in the Hunli Sector between the 2nd and the 6th October, 1979, had caused unprecedented flash floods in Chillu rivulet (nala). A dozer, operating in the landing zone for formation cut located beyond that rivulet, was in danger of being swept away due to fast erosion. On the 4th October, 1979, Pioneer Chinna Raju who knew dozer operating and was deployed on that dozer, decided to take the dozer to a safe place across the Chillu nala. In complete disregard to the risk of being swept away by the fast water flow in the nala, he succeeded in taking the dozer across and saved it. As soon as the dozer was moved away, the road strech, where the dozer was parked, was washed away and Pioneer Chinna Raju remained stranded there for two days.

In this action, Pioneer Chinna Raju displayed courage and devotion to duty of a high order.

11. IC-89438 Naib Subedar BACHAN SINGH,
Garhwal Rifles.

(Effective date of the award : 5th October, 1979)

On the 5th October, 1979, Naib Subedar Bachan Singh, with 20 other Ranks, was detailed to raid a suspected hostile hide-out in Parva Sector of South Mizoram. Moving through thick jungle and mountainous terrain, he and his men reached the huts where the hostiles were hiding. He reconnoitered the area and organised his men into two groups. Leading one group himself, he planned to capture the hostiles alive by executing a surprise raid and instructed his men not to alert the hostiles by opening fire. The subsequent assault by the two groups unnerved the hostiles and some of them tried to flee. Asking three of his men to chase the fleeing hostiles, the rest of his group engaged the other hostiles who were firing from the second hut. This encounter, resulted in successful accomplishment of the mission in which two hostiles were killed and one was captured alive with three rifles and ammunition.

In this action, Naib Subedar Bachan Singh displayed leadership and courage of a high order.

12. 4042501 Lance Havildar DAYAL SINGH,
Garhwal Rifles.

(Effective date of the award : 5th October, 1979)

Lance Havildar Dayal Singh was the Second in Command of a party which was detailed to raid a hostile hideout in Parva sector of South Mizoram. On the 4th October, 1979, Lance Havildar Dayal Singh, along with his party of five Other Ranks, was ordered to raid a hut where two armed hostiles were suspected to be hiding. Around midnight, when they reached within 70 metres of the hut, they came under effective hostile fire. Undeterred by the sudden firing, Lance Havildar Dayal Singh led his men on a charge at the hostile position. Although he was seriously wounded in the shoulder in the ensuing encounter he led the assault. Despite his bleeding wound, he pounced on one of the fleeing hostiles and captured him alive along with his weapon. In this encounter one of his men also sustained a serious injury and became unconscious. Lance Havildar Dayal Singh ensured that his comrade was attended to before getting medical aid for himself. On his way back, he refused to be carried on a stretcher inspite of his being seriously wounded.

In this action, Lance Havildar Dayal Singh displayed determination, leadership and courage of a very high order.

13. Flight Lieutenant CHANDRASHEKHAR JAYAWANT (13587) Flying (Pilot),

(Effective date of the award : 12th October, 1980)

On the 12th October, 1979, Flight Lieutenant Chandrashekhar Jayawant was ferrying an Ajeet aircraft from Hindon to Srinagar. While he was at some distance from the airfield at an altitude of 1400 metres, he experienced a sudden loss of power which soon resulted in a flame out. Despite this emergency, he maintained his composure and took stock of the situation in a professional manner. When his two attempts to relight the engine failed and he realized that the usual low key entry on to the runway was not possible because of the inadequate height of his dead engine aircraft, he decided to land against traffic. He informed the Air traffic control to keep the runway clear for his proposed landing and successfully accomplished the first dead-stick landing on an Ajeet, without any damage to the aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Chandrashekhar Jayawant displayed courage, presence of mind and professional skill of a high order.

14. Captain RAGHUVINDER KAPOOR (IC 30176),
4 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 4th December, 1979)

gang of extremists, which was active in Imphal and the valley, was responsible for a large ummber of insurgency cases in urban areas in Manipur during November, 1979. Captain Raghuvinder Kapoor was detailed to apprehend the extremists.

On receipt of information that the gang was to meet in the house of a notorious criminal in a village on the 4th December, 1979, Captain Kapoor raided the house and captured two youngmen. On the basis of the information revealed by these two captives, the wanted extremise, Inocha Singh, was captured from another village and handed over to the Police.

During December, 1979, and January, 1980, when attempts were made on the lives of a former Speaker and a former Finance Minister of Manipur and a prominent political leader was killed by the extremists at his residence, the situation steadily deteriorated. To cope with this situation, Captain Raghuvinder Kapoor established close rapport, cooperation and efficient functional liaison with the civil administration and built up an effective intelligence net-work. On the basis of the information gathered from these sources, he was able to apprehend many of the hard core extremists who were involved in cases of murders, loot and arson and created chaos amongst civil population. Some arms, ammunition and a few sensitive documents were also captured.

Captain Raghuvinder Kapoor thus displayed determination, leadership and courage of a high order.

15. Flying Officer PRAMOD KUMAR JAIN (15017) Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 4th December, 1979)

On the 4th December, 1979, Flying Officer Pramod Kumar Jain was flying on an air combat training mission. He had gone about eighty kilometres from the base when the generator in his aircraft went dead. The subsequent total electrical failure deprived him of the use of the compass and the radio telephone. The situation was further aggravated when noxious fumes and dense smoke, caused by a battery-cum-electrical fire, filled the cookpit. This not only obscured his view but added to his discomfiture. It was a serious situation for a young trainee pilot. But Flying Officer, Jain did not lose his composure and, working on the procedure laid down for such emergencies, he proceeded towards his base. It was, however, a feat of his professional skill that although deprived of all mechanical aids including the tail parachute and automatic wheel braking system, he made a flapless landing without any further damage to the aircraft.

In this action, Flying Officer Pramod Kumar Jain displayed courage, presence of mind and professional skill of a high order.

16. Flying Officer RAHUL DHAR (14561), Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 10th January, 1980)

On the 10th January, 1980, Flying Officer Rahul Dhar experienced a flame out while flying a Gnat aircraft. His three attempts to relight the engine failed and the aircraft continued to lose height. Even in this critcal situation without abandoning the aircraft, he decided to forceland. By the time he was able to lower the undercarriage through the time consuming emergency system because the hydraulic control had suddenly failed, he found himself approaching the runway from too high an altitude and at a speed 70 Knots more than permitted for normal landing. Fully aware of the disastrous consequences of landing in such circumstances, he remained calm, controlled the 'float' of the aircraft and touched down half-way up the runway at that high speed. Facing again an equally hazardous situation, resulting from the fast running out of the landing space and the risk of excessive braking to stop the aircraft, he made full use of his professional skill and brought the aircraft to a safe halt at the very end of the runway.

In this action, Flying Officer Rahul Dhar displayed courage, presence of mind and professional skill of a high order.

17. 260583 Sergent SHER SINGH KADIAN, Radar Fitter.

(Effective date of the award : 11th February, 1980)

On the 11th February, 1980, at about 7.45 p.m. a fire broke out in Tower "A" of a Signal Unit where extremly sophisticated and expensive electronic equipment had been stored. Within minutes, the entire deck of the tower was engulfed in thick smoke and toxic fumes. While the intense heat made it almost impossible to enter the deck, the thick smoke made it difficult to locate the source of fire.

Sergent Sher Singh Kadian, who was off duty, reached the tower within minutes of his hearing the fire alarm. Undaunted by the heat and smoke, he picked up a fire hose, entered the deck and located the source of fire within a cabinet with panels secured by screws. Realising that the waterjet could not be effectively directed at the source of fire, he ran down and brought a screw driver. Although he was almost over-come by the thick swirling smoke and toxic fumes on opening the cabinet, he ultimately succeeded in bringing the fire under control.

In this action, Sergeant Sher Singh Kadian displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

18. G-7844 Chargeman KARNAIL SINGH, General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 18th February, 1980)

On the 18th February, 1980, a dozer, while clearing freshly cut earth on account of formation works in sector on Khet-Sauji, fell 63 metres down into a rivulet. The site where the dozer was lying up-side down was not easily accessible at it was enclosed by steep hill slopes. Chargeman Karnail Singh was detailed to recover the dozer. In complete disregard to his personal safety and despite bad weather and inhospitable terrain, Chargeman Karnail Singh organised his men and material and proceeded to recover the dozer. The vehicle which was lying in slush on a hilly slope, was slowly drifting down. On reaching the site, he and his men laboured for three days and ultimately succeeded in bringing the dozer to a safe and level ground about a kilometre away.

In this action, Chargeman Karnail Singh displayed courage, determination and professional skill of a high order.

19. 5443544 Lance Naik GIRI BAHADUR GHARTI, 5 Gorkha Rifles (FF).

(Effective date of the award : 2nd March, 1980)

On the 1st March, 1980, troops on the other side of the Line of Control in Jammu and Kashmir opened unprovoked automatic weapon fire on one of our posts. They used tracer bullets to start bush fires around our post and when our troops went out to extinguish the fire, they started firing at them. The bush fire had reduced the perimeter of the post to ashes and had caused unbearable heat and heavy smoke inside the two bunkers located there. To extinguish the bush fire, the foremost necessity was to stop the gun fire coming from across the Line.

Lance Naik Giri Bahadur Gharti, who was occupying one of the bunkers, was ordered to take retaliatory action. Braving the intense heat and despite poor visibility caused by heavy smoke around him, he directed effective and accurate fire at the source of firing from across the line and silenced it.

In this action, Lance Naik Giri Bahadur Gharti displayed undaunted courage, determination and devotion to duty of a very high order.

20. G-22119 Mate KEDAR SINGH, (Posthumous) General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 20th March, 1980)

On the 20th March, 1980, at about 1815 hours when personnel at a Road construction camp on Serchip-Thingzwal road in Mizoram were getting ready for the evening roll call, a gang of hostiles, armed with automatic weapons, started firing at them and later set fire to the whole camp. In complete disregard to his own safety, Mate Kedar Singh came forward and challenged the hostiles. Calling out other personnel at the camp to take cover, he single-handedly started extinguishing the fire to save precious lives and Government property at the camp. While Mate Kedar Singh was extinguishing the fire, he was shot dead by the hostiles on the spot.

In this action, Mate Kedar Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

21. G-63028 MT Driver RAM SINGH,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 24*th March*, 1980)

On the 24th March, 1980, MT Driver Ram Singh of a Formation Cutting Platoon (GREF) was carrying bridging equipment from Silchar to Khawruhlian in Mizoram At about 1210 p.m., when his vehicle reached the 102nd kilometre on Silchar-Aizal Road, the hostiles started firing at the vehicle with automatic weapons. Driver Ram Singh received one bullet in his leg and two in his body below the hip, the latter greviously injuring him in his abdomen. Although profusely bleeding, he did not lose his presence of mind, and despite one front wheel puncture, he drove the vehicle away from the range of the hostile fire.

In this action, MT Driver Ram Singh displayed exemplary courage, undaunted determination and professional skill of a high order.

22. 2465984 Sepoy RANJODH SINGH,
Punjab.

(Effective date of the award : 23*rd April*, 1980)

On the 23rd April, 1980, a Border Roads Task Force vehicle, while crossing a swollen nala in Arunachal Pradesh, came to a halt midstream when water entered its engine. Its two occupants, the driver and an Assistant Engineer who was carrying cash for disbursement to the labourers, climbed to the roof of the vehicle and shouted for help. Although a large number of other people, who had come by a bus, were present on the bank of the nala, only Sepoy Ranjodh Singh came forward to help them.

Sepoy Ranjodh Singh tried to cross the seven metre distance to the vehicle through the fast flowing water but could proceed no further after he got neck deep into the water. He then balanced himself against a rock and asked the Assistant Engineer to throw his brief case to him and safely deposited it on the bank. Thereafter he tied his turban with his trousers and flung one end of it to the Assistant Engineer who caught the turban and jumped into the water. The swift current, however, swept both of them away. Luckily, the turban got stuck to a big boulder when Sepoy Ranjodh Singh swam to the Assistant Engineer and rescued him. In the meantime, the driver of the vehicle swam out of the nalla himself.

In this action, Sepoy Ranjodh Singh displayed initiative, determination and courage of a high order.

23. Flight Lieutenant SUMIT MUKHRJI (12925),
Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 8*th May*, 1980)

On the 8th May 1980, Flight Lieutenant Sumit Mukerji was flying an instructional instrument Flying sortie. At a height of about 4900 metres, he experienced a front bearing failure and shortly engine seizure took place. Till then, no reliable statistics were available on the rate of descent experienced with a seized engine and different configurations of aircraft using undercarriage and flaps. With a totally professional approach, unmindful of great danger to his own life, Flight Lieutenant Mukerji passed on to the flying control the various rates of descent he experienced with and without the lowering of undercarriage. Despite the very high rate of descent, he through his fine airmanship managed to land the aircraft and thereby saved a valuable aircraft from certain destruction. He also helped in collecting valuable data on the situations that follow an engine seizure.

In this action, Flight Lieutenant Sumit Mukerji displayed courage, presence of mind and professional skill of a high order.

24 2179 Village Guard TANGHIU KHEMNUNGAN,
Kenjong Village Guard Post,
District Tuensang, Nagaland.

(Effective date of the award : 13*th May*, 1980)

On 13th May 1980 at about 12.30 p.m. when most of the residents of Kenjong Village in Nagaland had gone out to their fields and the five Village Guards were left behind a group of about 300 undergrounds, armed with automatic weapons, entered the village along with about 100 porters. Without caring for his own safety, Village Guard Tanghiu Khemnungan opened fire at the hostiles. In the ensuing encounter, he was wounded by the hostile fire and was overpowered.

In this action, Village Guard Tanghiu Khemnungan displayed courage and devotion to duty of a high order.

25. 2163, Village Guard TSANGSOI KHEMNUNGAN,
Kenjong Village Guard Post,
District Tuensang,
Nagaland.

(Effective date of the award : 13*th May*, 1980)

On the 13th May 1980, at about 12.30 p.m. when almost all the villagers had left for their fields and five Village Guards were left behind at Kenjong village, about 300 armed underground hostiles armed with automatic weapons, entered Kenjong village along with about 100 porters. Village Guard Tsangsoi Khemnungan, without caring for his own life, opened fire at the hostiles and injured some of them. In the ensuring encounter with the overwhelming number of hostiles, he was overpowered.

In this action, Village Guard Tsangsoi Khemnungan displayed courage and devotion to duty of a high order.

26. Major VIJAY SINGH (IC 26079),
Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of the award : 16*th May* 1980)

On the 15th May 1980, an Infantry Battalion was deployed to combat the activities of the hostiles at Imphal.

On the 16th May 1980, a patrol party under Major Vijay Singh was sent out to reconnoitre the area. On the way, when some persons coming in a jeep from the opposite direction, opened fire on them, Major Vijay Singh returned the fire and shot down the occupant of the front seat of the jeep, who was firing. Simultaneously, he deboarded his vehicle and rallied his men to take position. In the encounter that ensued, all the three hostiles were killed on the spot. Their jeep with arms and ammunition was seized. One of the killed insurgents was later identified as a known bad character of the area who was wanted in connection with several robbery cases.

In this action, Major Vijay Singh showed exemplary presence of mind, determination and courage of a high order.

27. 5745111 Rifleman KRISHNA BAHADUR RANA.
8 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 18*th May*, 1980)

On the 18th May 1980, Riffleman Krishna Bahadur Rana who was on duty at an operational location in a high altitude area in Sikkim, was detailed to accompany a Non Commissioned Officer to a post for collecting defence stores. They collected the stores after traversing indistinct tracks in foggy weather with poor visibility. On the return journey, the leading Non Commissioned Officer accidentally crossed into a mine field, stepped on a mine and was severely injured as a result of a mine blast. Riffleman Rana, unmindful of the risk involved, entered the mine field, gave him first aid, lifted him on to his shoulders and carried him to a place of safety. He subsequently obtained help from a nearby unit and evacuated the casualty to the nearest Medical Aid Post.

In this action, Rifleman Krishna Bahadur Rana displayed great initiative, courage, determinatoin and devotion to duty of a high order.

28. 3962863 Naik SURINDER SINGH
Dogra.

(Effective date of the award : 21*st May*, 1980)

On the 21st May 1980, when an Infantry Battalion was engaged in an exercise near UDO KE KALAN village in Punjab, Naik Surinder Singh saw an Indian Air Force aircraft crash to the ground. He ran to the site of the accident and found the aircraft ablaze and its debris strewn all around. Subsequently, he, along with Sepoy Halka Ram, climbed on to the aircraft, broke open its canopy, cut the straps from the pilot's body and dragged him out of the cockpit while the aircraft was still ablaze. Unfortunately, the pilot had already died. Thereafter, they cordoned off the area with the help of the villagers till the civil and Air Force authorities arrived and took control of the situation.

In this action, Naik Surinder Singh displayed courage, initiative and devotion to duty of a high order.

29 3976718 Sepoy HALKA RAM, DOGRA.

(*Effective date of the award* : 21*st May* 1980)

On the 21st May 1980, when an Infantry Battalion was engaged in an exercise near UDO KE KALAN village in Punjab, Sepoy Halka Ram saw an Indian Air Force aircraft crash to the ground. He ran towards the site of accident and found the air-craft ablaze and its debris strewn all around. He, along with Naik Surinder Singh, climbed on to the aircraft, broke open the canopy, cut the straps from the pilot's body and dragged him out of the air-craft which was still burning. Unfortunately the pilot had already died. Thereafter, they cordoned off the area of the accident with the help of the villagers till the civil and Air Force authorities arrived and took control of the situation.

In this action, Sepoy Halka Ram displayed initiative, courage and devotion to duty of a high order.

30. GO-NYA Assistant Engineer (Civil) SUKUMARAN HARIDASAN,

General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of the award* : 30*th May* 1980)

Shri Sukumaran Haridasan who was entrusted with the task of snow clearance on a 48 kilometre stretch of Srinagar-Leh Road, located between Gund and Gumri reached the site with his men and machinery on the 16th March, 1980. The area was prone to heavy snowfall, landslides and frequent avalanches. Consequently, there was an accumulation of 15 to 25 metre deep snow at places. Despite severe and hazardous conditions, Shri Haridasan continued to work for long hours during day and night. His guidance and personal presence and participation inspired his men to work with vigour and devotion and completed the task in seventy two days, well before the scheduled time.

Shri Sukumaran Haridasan thus displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order.

31. G-116269 Suboverseer ANAPPARACKAL THOMAS VARUGHESE,

General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of the award* : 30*th May*, 1980)

Suboverseer Anapparackal Thomas Varughese was deployed for snow clearance on a 48 kilometre stretch of Srinagar—Leh Road between Gund and Gumri. He was given the task of leading the snow clearance team which was equipped with very old machinery. Undaunted by heavy snow fall, blizzards, avalanches and land slides and in complete disregard to his personal safety and comfort, he kept on working long hours. It was due to his valuable guidance and inspiring leadership that the task of snow clearance was completed in record time.

Suboverseer Anapparackal Thomas Varughese thus displayed determination, leadership and devotion to duty of a high order.

32. 4345363 Lance Naik MATGAM NOKTE, Assam.

(*Effective date of the award* : 4*th June* 1980)

On the 4th June 1980, Lance Naik Matgam Nokte who was on Sentry duty at the rifle classification ranges at Madras, noticed a person moving around the ranges, in a suspicious manner. When he challenged him, the suspect took out a knife, and brandishing it, tried to run away. Unmindful of the risk involved, Lance Naik Nokte chased the suspect and overpowered him. In the hand-to-hand fight that ensued, he, although injured, was able to make the suspect surrender. The suspect was later identified as a notorious criminal responsible for two robberies and three cases of chain snatching from ladies.

In this action, Lance Naik Matgam Nokte displayed great initiative, exemplary courage and determination of a high order.

33. Flight Lieutenant JAYARAMAN LAKSHMI NARAYANAN (14110),

Flying (Pilot).

(*Effective date of the award* : 18*th June* 1980)

On the 18th June, 1980, Flight Lieutenant Jayaraman Lakshmi Narayanan was flying a MIG aircraft on a routine dark night training mission, where flying is done by resorting to instruments only. This was his third sortie under such conditions. At a height of about 5000 metres over Talwara town, he experienced engine surge during a 60° banked turn. He tried to roll out of the turn; when he found that the controls of the aircraft had jammed. The aircraft continued to roll and went into a steep dive over the town. At this stage, Flight Lieutenant Lakshmi Narayanan realised that a crash was imminent. He would have been well justified in ejecting to ensure his personal safety. However, he decided to stay with the aircraft and made a determined effort to deviate the aircraft to save the township from disaster at the cost of his life. He reacted with exceptional presence of mind and professional skill and recovered the aircraft barely 600 metres above the sleeping township. The aircraft had lost so much height that at the time of recovery it was a few seconds from total destruction. Flight Lieutenant Lakshmi Narayanan continued to display extremely high degree of airmanship and inspite of the controls malfunctioning he returned to base carrying out left turns only and landed safely. This young pilot unmindful of certain fatal consequences to himself, in his efforts to save the inhabitants of township, displayed cool professional competence of an exceptional order.

In this action, Flight Lieutenant Jayaraman Lakshmi Narayanan displayed courage, presence of mind and professional skill of a very high order.

34. MANGILAL KATHAT, Leading Air Crew Diver (054925-F) Indian Navy.

(*Effective date of the award* : 1*st July* 1980)

On the 1st July 1980, Leading Air Crew Diver Mangilal Kathat was detailed to participate in a helicopter search and rescue mission off the Bogmolo Coast for a fisherman. On sighting the fisherman who was rapidly drifting seaward he guided the helicopter pilot to the exact spot. Realising that the fisherman was in a precarious condition due to his long struggle for survival, he jumped from the helicopter. Braving the rough sea, he approached the exhausted fisherman, secured the rescue straps around him and waited until both of them were lifted into the helicopter. He courageous effort saved a drowning fisherman.

In this action, Leading Air Crew Diver Mangilal Kathat displayed courage, determination and professional skill of a high order.

35. Flight Lieutenant RAJDEEP SINGH MANN (13612),

Flying (Pilot).

(*Effective date of the award* : 14*th August* 1980)

On the 14th August 1980, Flight Lieutenant Rajdeep Singh Mann was carrying out an air test on an S-22 aircraft. While he was carrying out checks on the control system at a height of 6 kilometres, the aircraft suddenly pitched up with an unexpected suddenness. In this process, the pilot blacked out completely as the 'g' loading on his body went up to an incredible figure. By the time he regained his senses, the aircraft had come down to 2.8 KM above the ground and was in a steep dive with speed well beyond 1000 KMPH. Flight Lieutenant Mann immediately initiated recovery action using all his force and pulled the aircraft out of its screaming dive. The controls responded very slowly and once again his body experienced severe strain. His vision was fading and the possibility of blacking out at this extremely low height could not be ruled out. Eventually, his will to survive prevailed over an impossible situation. Despite intense discomfort severe headache and pain in the spine, this young pilot remained calm and unruffled and regained full control of the aircraft which he brought back for a safe landing. This has enabled technicians to determine the cause of malfunction and in the process perhaps many a life have been saved.

In this action, Flight Lieutenant Rajdeep Singh Mann displayed courage, strong determination, presence of mind and professional skill of a high order.

No. 29-Pres/81.—The President is pleased to approve of the award of "BAR to SHAURYA CHAKRA" to the undermentioned person for acts of gallantry to :—

G-31341 Driver Mechanical Equipment PREM CHAND, General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of the award* : 30*th July* 1979)

Due to flash floods, wide spread damage was caused to road formation between Charduar and Tawang in Arunachal Pradesh. Driver Mechanical Equipment Prem Chand of a Road Maintenance Platoon (GREF) was deployed to clear the land slides and restore the road for traffic. Due to heavy rains and blasting and drilling along the route, chunks of soft rock, boulders and slush kept on rolling down continuously. Undeterred by these hazards and in utter disregard to his own safety, Driver Mechanical Equipment Prem Chand undertook the task and kept on working almost non-stop for about a month and succeeded in clearing the land slides. He also simultaneously completed a new formation cut in record time.

Driver Mechanical Equipment Prem Chand thus displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

V. K. DAR
Secy. to the President

MINISTRY OF PLANNING
DEPARTMENT OF STATISTICS

New Delhi-110001, the 24th March 1981

No. M. 13011/2/80-NSS-II.—In partial modification of the Department of Statistics Notification No. M. 13011/2/80-NSS.II dated the 27th November, 1980, Shri O. P. Gupta, Economics & Statistical Adviser to the Govt. of Haryana, has been appointed as Member of the Governing Council of the National Sample Survey Organisation, *vice* Shri R. P. Chopra with immediate effect and upto 19th November, 1982.

R. N. SAXENA, Dy. Secy.

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 7th March 1981

RESOLUTION

No. I-12011(9)/80-Plant(A).—The Government have decided to enlarge the membership of the Committee on Export Strategy for bulk tea to make the Committee more broad-based and give adequate representation to non-producing trading interests by the addition of two more members.

In para 2(b) of the resolution of even no dated 31st January, 1981 after Sl. No. 6 the following shall be added

(7) Shri S R. Dutt.
Chairman, Calcutta Tea Traders' Association, Calcutta.

(8) Shri D. K. Ghosh,
M/s A. Tosh & Co., Calcutta.

In para 2(ç) the word 'Member-secretary' shall be substituted for 'secretary'.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India.

The 9th March 1981

RESOLUTION

No. I-12011(9)/80-Plant(A).—The Government have decided to enlarge the membership of the Committee on Export Strategy for value added items of tea to make the committee more broad-based and give adequate representation to non-producing trading interests by the addition of two more members.

In para 2(b) of the resolution of even no. dated 31st January, 1981 after Sl. No. 6 the following shall be added

(7) Shri Rajesh Bahadur,
Chairman,
Lipton (India) Ltd.,
Calcutta.

(8) Shri Md. Erfan Randerian,
M/s G. A. Randerian,
Calcutta.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India.

D. W. TELANG, Joint Secy.

MINISTRY OF PETROLEUM, CHEMICALS & FERTILIZERS
(DEPARTMENT OF PETROLEUM)

New Delhi, the 23rd March 1891

ORDER

Subject : Grant of Petroleum Exploration Licence for PY-3 Structure (C-I) area measuring 69.975 Sq. Kms.

No. 12012/13/80-Prod.—In exercise of the powers conferred by clause (i) of sub-rule (1) of rule 5 of the Petroleum and Natural Gas Rules, 1959, the Central Government hereby grants to the Oil & Natural Gas Commission, Tel Bhavan, Dehradun (hereinafter referred to as Commission) a Petroleum Exploration Licence to prospect for Petroleum for year from
measuring the particulars of which are given in schedule 'A' annexed hereto.

The Grant of Licence is subject to the terms and conditions mentioned below.

(a) The Exploration Licence should be in respect of Petroleum,

(b) If any minerals are found during the exploration work, the Commission should bring that to the notice of the Central Government with full particulars thereof.

(c) Royalty at the rates mentioned below shall be charged.

(i) Rs. 42/- per metric tonne or such rates as may be fixed by the Central Government from time to time or all crude oil and casing head condensate.

(ii) In case of natural gas, at such rates as may be fixed by the Central Government from time to time.

The royalty shall be paid to the Pay & Accounts Officer, Department of Petroleum, New Delhi.

(d) The Commission shall, within the first 30 days of every month, furnish to the Central Government, a full proper return, showing the quantity and gross value of all crude oil, casing head condensate and natural gas obtained during the preceding month in pursuance of the licence. The return shall be in the form given in Schedule 'B' annexed hereto.

(e) The Commission shall deposit a sum of Rs 6.000/- as security as required by rule 11 of the PNG Rules, 1959.

(f) The Commission shall pay every year a fee in respect of the licence calculated at the following rates for each square kilometer or party thereof covered by the licence.

(i) Rs. 4/- for the first year of the licence;

(ii) Rs. 20/- for the second year of the licence·

(iii) Rs. 100/- for the third year of the licence;

(iv) Rs. 200/- for the fourth year of the licence:

(v) Rs. 300/- for the first and second year of renewal.

(g) The Commision shall be at liberty to determine the relinquishing of any part of the area covered by the exploration licence by giving not less than two months' notice in writing to the Central Government as required by sub-rule (3) of rule 11 of the Petroleum and Natural Gas Rules, 1959.

(h) The Commission shall immediately on demand submit to the Central Government confidentially a full report of the geological date of all the minerals found during the exploration of oil and natural gas and shall submit without fail every six months the results of all operations, boring and exploration to the Central Government.

(i) The Commission shall take preventive measures against the hazard of fire under sea bed and/or on the surface and shall keep such equipment, supplies and means to extinguish the fire at all times and shall pay such compensation to third party and/or Government as may be determined in case of demage due to the fire.

(j) This exploration Licence shall be subject to the provisions of the Oil Fields (Regulation and Development) Act, 1948 (53 of 1948) and the Petroleum and Natural Gas Rules, 1959.

(k) The Commission shall execute a deed of the Petroleum exploration licence in the form applicable to offshore areas as approved by the Central Government.

The area covered by this Petroleum Exploration Licence falls in PY-3 Structure (C-I) (offshore) area and lies between the latitudes 11° 11′ 34″ South to 11° 18′ 43·8′ North and longitudes 79° 53′ 39″ West to 80° 01′ 48·6″ East and is delincated in the map by the line joining the corner points at ABC and D measures 69·975 Sq. Kms. area. The latitudes and longitudes on which the points covering the area fall and the distance in between them are as follows :—

Bearing

	Latitudes			Longitudes		
	Deg.	Min.	Sec.	Deg.	Min.	Sec.
1. Point A is at	11	11	34	79	55	9·6
2. Point B is at	11	13	27	79	53	39
3. Point C is at	11	18	43·8	80	00	16·2
4. Point D is at	11	16	50	80	01	48·6

Approximate distance from three prominent places on land are as follows :—

Nagapattinam — 57 Kms.
Cuddalore — 60 Kms.
Tanjore — 100 Kms..

Schedule 'B'

Monthly return of crude oil, casing-head condensate and natural gas produced and value therof.
Petroleum Exploration Licence for PY-3 Structure (C-I)
Area measuring 69·975 Sq. Kms.
Month and Year :

A. Crude Oil

Total No. of Metric Tonnes obtained	No. of Metric Tonnes unavoidably lost or returned to natural reservoir	No. of Metric Tonnes used for purpose of petroleum exploration operation approved by the Central Government.	No. of Metric Tonnes obtained less columns 2 and 3	Remarks
1	2	3	4	5

B—Casing head condensate

Total number of Metric Tonnes obtained	No. of Metric Tonnes unavoidably lost or returned to natural reservoir	No. of Metric Tonnes unsed for purposes of petroleum exploration approved by Central Government.	No. of Metric Tonnes obtained less columns 2&3	REMARKS
1	2	3	4	5

C—Natural Gas

Total number of cubic metres obtained	Number of cubic metres unavoidably lost or returned to natural reservoir	Number of Cubic metres used for purposes of petroleum exploration approved by the Central Government.	Number of cubic metres obtained less columns 2&3	REMARKS
1	2	3	4	5
1.				

I, Shri ——————————do hereby solemnly and sincerely declare and affirm that the information in this return is true and correct in every particular and make this solemn declraration conscientiously believing the same to be true.

(Signature)

By order and in the name of the President of India.

T. N. PARAMESWARAN, Under Secy.

MINISTRY OF INDUSTRY

(DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT)

DIRECTORATE GENERAL OF TECHNICAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 25th March 1981

RESOLUTION

No. Ref. 4(4/76-81)—Government of India have decided to reconstitute the Development Panel for Refractory Industry with the following composition for a period of two years from the date of issue of this Resolution : –

1. Dr. S. S. Ghosh, Sunder Consultants, EC-46, Sector-1, Salt Lake City, **Calcutta-700064.**	Chairman	Refractory Industry.
2. Shri M. H. Dalmia, M/s Orissa Cement Ltd., 4 Sciendia House, **New Delhi-110001.**	Member	Do.
3. Shri K. P. Jhunjjhunwala, M/s Orissa Industries Ltd., Uditnagar, **Rourkela-769012** (Orissa)	Member	Do.
4. Shri Ajit Sen., M/s Bharat Refractories Ltd., Bhilai Refractory Plant, Marauda P. O. Newai, **Durg (M.P.)**	Member	Manufacturer Public Sector
5. Shri B. V. Appa Rao, Chief Refractories Engineer, Bhilai Steel Plant, **Bhilai (M. P.)**	Member	Consumer
6. Dr. N. R. Sirkar, Central Glass and Ceramic Research Institute, P. O. Yadavpur Unit, **Calcutta-700032.**	Member	R&D
7. Shri B. Ramachandran, M/s Metallurgical & Engineering Consultants (India) Ltd., **Ranchi-700032.**	Member	Consultant
8. Shri V. D. Mahajan, Geologist (Sr.) Geological Survey of India, Central Region, **Nagpur.**	Member	Raw Materials
9. Director/Deputy Secretary In Charge of Refractory Industry, Deptt. of I. D., **New Delhi.**	Member	Administration
10. DO (Refractories) D. G. T. D.	Member Secretary.	

2. The terms of reference of the Panel would be as under :—

1. To consider the present stage of development of the industry and to recommend measures for its accelerated growth.
2. Forecasting of future technological needs including technology and quality upgradation.
3. To examine the extent to which standardisation has been achieved and evolve specific programmes for further standardisation in consultation with ISI.
4. To consider norms of materials and energy conservation aspects.
5. To study the statewise/regionwise requirement for various industries and suggestions for creation of further capacities to meet the growing needs of future years to come.
6. Modernisation and rehabilitation.
7. Any other point, deemed fit.

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to all concerned, Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

R. RAMANUJAM, Dir. (Admn.)

MINISTRY OF AGRICULTURE

(DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION)

New Delhi, the 25th March 1981

RESOLUTION

No. 19-6/80-PPS(Vol. II).—In continuance of para 3 (f) of this Ministry's Resolution No. 19-6/80-PPS dated the 21st October, 1980, it has now been decided that the team will be required to submit reports by 31-7-1981.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution dated 6-3-81 be communicated to all the State Governments, Administrations of Union Territories and Ministries and Departments, of Government of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. L. RAO, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION AND CULTURE

(DEPARTMENT OF CULTURE)

New Delhi, the 24th March 1981

RESOLUTION

No. F. 1-5/81-CH.I.—In accordance with the provisions contained in Rule 3, read with Rule 13, of the Rules of the Indian Council of Historical Research, New Delhi, the Government of India have decided to appoint Professor Nihar Ranjan Ray, Director, Institute of Historical Studies, Calcutta, as the Chairman of the Indian Council of Historical Research for a period of 3 years with effect from the 9th April, 1981, or from the date he assumes office of the Chairman of the Council whichever is later.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to the Director, Indian Council of Historical Research, 35, Ferozeshah Road, New Delhi.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

M. R. KOLHATKAR, Jt. Secy.

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(SHIPPING WING)

New Delhi-1, the 5th May 1981

RESOLUTION

No. SW/MTC(23)/80-MT.—In pursuance of Resolution of the Government of India in the late Ministry of Transport and Communications (Department of Transport) No. 24-MT(6)/52 dated the 17th August, 1959, the Central Gov-

ernment have reconstituted the Merchant Navy Training Board for a period of two years from the date of issue of this Resolution as follows :—

Chairman

1 Shri Chandrabhan Athare Patil Member of Parliament (Lok Sabha).

Vice Chairman
(Ex-Officio)

2 Director General of Shipping, Bombay.

Representative of Parliament

3 Shri S. K. Vaishampayam
Member of Parliament (Rajya Sabha)

Members
(Ex-Officio)

4. Joint Secretary to the Govt of India, Ministry of Shipping and Transport, dealing with the Merchant Navy Training Institutions.

5. Joint Secretary to the Govt. of India, Finance Division, Ministry of Shipping, and Transport.

6. Nautical Adviser to the Government of India Bombay

7. Chief Surveyor with the Government of India Bombay

8 Principal, Lal Bahadur Shastri Nautical and Engineering College, Bombay.

9 Captain Superintendent
Training Ship 'Rajendra', Bombay.

10 Director Marine Engineering Training, Calcutta.

11 Superintendent
Ratings Training Establishment 'Bhadra'
Calcutta

12 Assistant Educational Adviser(T)
Western Regional Office, Ministry of Education & Culture, 2nd floor, Industrial Assurance Building, Bombay

13 Joint Director of Naval Training
Naval Headquarter,
Delhi.

Representative of the All India Council for Technical Education

14 Prof. S Sampath,
Member, U.P.S.C

Representative of the Shipping Corporation of India

15 Captain C. G. Bhoot, Chief
Personnel Manager, Shipping Corporation of India Ltd, Bombay

Representative of Port Trust

16 Capt. Gopal Krishna Lajmi
Harbour Master, Bombay Port Trust,
Bombay.

Representative of the Indian National Ship Owners Association

17. Shri T. M Goculdas

18. Capt. S. K. Misra

Representative of Owners/Agents Committee (Crew) Bombay/Calcutta

19. Shri K. S. Bhandarkar
(Captain R. Prem Chand, India Steamship Co. Ltd),
alternative representative in the event of the Board Meeting in Calcutta.

Representative of Federation of Indian Chamber of Commerce and Industry

20 Captain A. I. I. Ipe,
Messers Kamath & D'Abrao
Post Box No 578, Cochin 682303.

Representative of the Maritime Union of India

21. Shri K. E Sukhia

Representative of the Maritime Union of India

22 Shri Leo Barnes.

Representative of National Union of Seamen of India Calcutta

23. Shri Bijoy Mukherjee

Member Secretary

24. Deputy Director General of Shipping, Bombay dealing with Merchant Navy Training.

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to the Private and Military Secretaries to the President, the Prime Minister's Secretariat, the Cabinet Secretariat, all the Ministries of the Government of India, all the State Governments, the Port Trusts and the Director General of Shipping Bombay.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

A. PADMANABAN, Jt. Secy

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1981